तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका
अक्तूबर - 2020 रु.5/-

१६-१०-२०२०
शुक्रवार
रात :
महाशेषवाहन

तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का नवरात्रि ब्रह्मोत्सव

२०२० अक्तूबर १६ से २४ तक

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर के अंदर एकांत में संपन्न वार्षिक ब्रह्मोत्सवों के विविध वाहन सेवाओं के दृश्यमालिका

ध्वजारोहण और महाशेषवाहन सेवा में भाग लेते हुए ति.ति.दे. उच्चताधिकारीगण

तिरुमल को पहुँचने वाली श्रीविल्लीपुत्तूर गोदामालाएँ

माननीय आं.प्र. के मुख्यमंत्री श्री वाई.एस.जगन्मोहन रेड्डी जी ने श्रीहरि की गरुडवाहन सेवा में भाग लेते हुए दृश्य

माननीय आं.प्र. राज्य के मुख्यमंत्री श्री वाई.एस.जगन्मोहन रेड्डी जी ने सरकार की ओर से श्रीहरि को रेशमीवस्त्र समर्पित करते हुए दृश्य

तिरुमल में संपन्न 'सुंदरकांडपारायण' कार्यक्रम में माननीयवर्य आं.प्र. राज्य और कर्णाटक राज्यों के मुख्यमंत्री श्री वाई.एस.जगन्मोहन रेड्डी जी और श्री बी.एस.येदियुरप्पा जी के भाग लेना का दृश्य

माननीय आं.प्र. मुख्यमंत्री श्री वाई.एस.जगन्मोहन रेड्डी जी को ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी द्वारा श्रीहरि का प्रसाद देता हुए दृश्य

माननीय आं.प्र. राज्य के मुख्यमंत्री श्री वाई.एस.जगन्मोहन रेड्डी जी ने माननीय कर्णाटक राज्य के मुख्यमंत्री श्री बी.एस.येदियुरप्पा जी को श्रीहरि का चित्रपट भेंट करने का दृश्य

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः॥
(- श्रीमद्भगवद्गीता १-१५)

श्रीकृष्ण महाराज ने पाञ्चजन्य नामक, अर्जुन ने देवदत्त नामक और भयानक कर्मवाले भीम सेन ने पौण्ड्रनामक महाशङ्ख बजाया।

भारतामृत सर्वस्वं विष्णोर्वक्त्रा द्विनिस्सृतम्।
गीता गंगोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥
(- गीता मकरंद, गीता की प्रशस्ति)

महाभारत के अमृतमय सर्वस्व, विष्णु के मुख से निकली गीता गंगा का जल-पान करने से पुनर्जन्म नहीं हो सकता।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

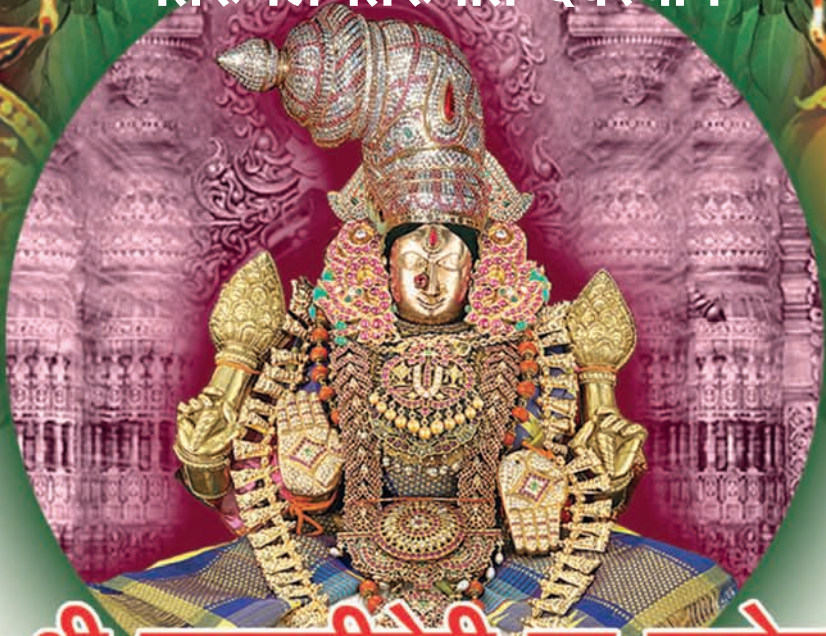

श्री पद्मावतीदेवी का ब्रह्मोत्सव तिरुचानूर-२०२०

११-११-२०२० से १९-११-२०२० तक

११-११-२०२०
बुधवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - लघुशेषवाहन

१२-११-२०२०
गुरुवार
दिन - महाशेषवाहन
रात - हंसवाहन

१३-११-२०२०
शुक्रवार
दिन - मोतीवितानवाहन
रात - सिंहवाहन

१४-११-२०२०
शनिवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - हनुमंतवाहन

१५-११-२०२०
रविवार
दिन - पालकी उत्सव
सायं - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

१६-११-२०२०
सोमवार
दिन - सर्वभूपालवाहन
रात - गरुडवाहन

१७-११-२०२०
मंगलवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

१८-११-२०२०
बुधवार
दिन - रथोत्सव
रात - अश्ववाहन

१९-११-२०२०
गुरुवार
दिन - चक्रस्नान,
पंचमीतीर्थ
रात - ध्वजावरोहण

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-५१ अक्तूबर-२०२० अंक-०५

विषयसूची

श्री आळ्वारों द्वारा श्री वेंकटाद्रि का मंगलाशासन	श्रीमती विजया कमल किशोर तापडिया	07
सरस्वती देवी	श्रीमती जे.शैलजा	10
गरुड वाहन वैभव	डॉ.जी.मोहन नायुडु	13
सेनै-मुदलियार (विष्वक्सेन जी)	श्रीमती शकुंतला उपाध्याय	16
श्री पिळ्ळै लोकाचार्य	श्री कृष्णकुमार. गुप्ता	17
पोय्गै आळ्वार (श्री सरोयोगि आल्वार)	श्रीमती उषादेवी. अगर्वाल	21
विजय पर्व विजयदशमी	श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालिया	23
भूतत आल्वार (श्री भूतयोगी स्वामीजी)	श्रीमती नीता गोकुलजी दरक	51
श्री वेंकटेश सुप्रभात	श्री यू.वी.पी.बी.श्रीनिवासाचार्यजी	53
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	56
भागवत कथा सागर भक्त प्रह्लाद की महिमा	श्री अमोघ गौराँग दास	58
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	61
हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश	डॉ.एम.आर.राजेश्वरी	62
नरक के तीन द्वार	श्री अमोघ गौराँग दास	64
अन्नमय्या के जीवन का इतिहास	श्रीमती पी.सुजाता	66
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	68
षोडशोपचार - विशिष्टता	श्री वेमुनूरि राजमौलि	69
आइये, संस्कृत सीखेंगे...!!	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	73
राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	74

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

गौरव संपादक
डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
आचार्य के.राजगोपालन्

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
(प्रचुरण व मुद्रणालय),
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00

अन्य विवरण के लिए:
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

मुखचित्र - महाशेषवाहन पर श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामी।
चौथा कवर पृष्ठ - हंसवाहन पर वीणापाणि के अलंकार में श्री मलयप्पस्वामी।

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

- प्रधान संपादक

संपादकीय

तिरुमल बालाजी के नवरात्रि ब्रह्मोत्सव

विना वेंकटेशं ननाथो न नाथः सदा वेंकटेशं स्मरामि स्मरामि।

हरे वेंकटेश प्रसीद प्रसीद प्रियं वेंकटेश प्रयच्छ प्रयच्छ।।

कलियुग के प्रत्यक्ष दैव एवं तिरुमल में विराजमान भगवान बालाजी स्वयंभू है। इस अवतार पुरुष की सेवा में भूलोकवासी ही नहीं, समस्त लोकवासी भी भक्ति श्रद्धा पूर्वक लगे रहते हैं। देवताओं में सर्वश्रेष्ठ एवं परब्रह्म स्वरूप भगवान बालाजी की पूजार्चना अत्यंत पुण्यप्रद हैं।

इसके अंतर्गत में श्री वेंकटेश्वर स्वामी को इस साल वार्षिक ब्रह्मोत्सवों के साथ-साथ नवरात्रि ब्रह्मोत्सव भी मनाया जा रहा है। सृष्टि कर्ता ब्रह्म द्वारा मनाये जाने के कारण इन्हें 'ब्रह्मोत्सव' कहते है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार तीन वर्ष को एक बार अधिक मास आता है। इस संदर्भ में तिरुमल में दो बार ब्रह्मोत्सवों के मनाने का आचार है। पहला निज भाद्रपद मास में वार्षिक ब्रह्मोत्सव और दूसरा आश्वयुज मास में नवरात्रि ब्रह्मोत्सव मनाये जाते हैं।

ब्रह्मोत्सवों में मनायी जानेवाली वाहन सेवाओं में विभिन्नता न होने पर भी ध्वजारोहण और ध्वजावरोहण में ही स्वल्प अंतर होता है। इसका कारण आगम शास्त्र है। इस नवरात्रि ब्रह्मोत्सव में श्री स्वामीजी सर्वालंकार भूषित होकर देवेरियों से कई वाहनों पर आरूढ़ होकर भक्तजनों को दर्शन देते हैं।

तिरुमल में स्वामी को कोई अर्चना किये जायेंगे, तो उसके तुरंत बाद हृदयलक्ष्मी की अर्चना भी की जाती है। यह तिरुमल क्षेत्र में रहे संप्रदाय है। शरन्नवरात्रियों में स्वामीजी लक्ष्मी देवी के साथ अभिन्न होकर रहे हुए वेंकटाचल क्षेत्र में नवरात्रि ब्रह्मोत्सवों का दर्शन करने से एक ओर स्वामीजी का और दूसरी ओर माताजी श्री महालक्ष्मी देवी का अर्चना किये फल की प्राप्ति पायेंगे। क्षेत्र पवित्रता को भंग न करके, संप्रदाय का आचरण करेंगे। भगवान जी को किये जाने वाले ब्रह्मोत्सवों में पवित्र रूप से भागीदार बनेंगे। दर्शन कर, दिव्यानुभूति को प्राप्त करें।

श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये!

- श्रीमती विजया कमल किशोर तापडिया
मोबाइल - ९४४९५१७८७९

श्री विष्णुचित्त आळवार (पेरियाळवार), श्री तिरुवेङ्गडमुडैयान् (श्री वेंकटेश भगवान) का मंगलाशासन करना चाहते हैं। आळवार को देखकर श्री वेंकटेश भगवान एक छोटेसे बालकृष्ण बन जाते हैं। उनके दर्शन कर श्री विष्णुचित्त आळवार में मातृत्व भाव जगता हैं इसलिए वे बालकृष्ण को श्री वेंकटाद्रि का स्वामी और वहाँ का निवासी बताते हैं। उनके कुछ पाशुरों का भाव -

पेरियाळ्वार तिरुमोळि के १-४-३वें पाशुर

श्री बालकृष्ण भगवान, आकाश में प्रकाशमान सुंदर चन्द्रमण्डल को देखकर, खेलने के लिए उसको लेना चाहा। इस चंद्राह्वान क्रीडा का वर्णन करते हुये श्री विष्णुचित्त आळवार स्वयं यशोदाभाव को प्राप्त कर गाते है... हे चन्द्र! प्रकाशमान (तुमने) मंडल को चारों तरफ घुमाकर, सब दिशाओं में प्रकाश को प्रसार कर, इस तरह से अपने आप को कितने भी परिष्कृत कर देने पर भी (तुम) मेरे पुत्र के मुख मंडल का समान नहीं बन सकोगे। विशेष वैभव के साथ श्री वेंकटाद्रि में वास करनेवाले यह बालकृष्ण की तुमको बुलानेवाले हथेलिया दुःखी न हो इस तरह से शीघ्र दौडते आ जा।

पेरियाळ्वार तिरुमोळि के १-८-८वें पाशुर में श्री वेंकटाद्रि के श्री श्रीनिवास भगवान में श्री वामन भगवान

का भाव करते हुए गाते हैं... ''यह क्या कपट है? (माने छोटे रूप से दान लेकर बडे रूप से जमीन को नापना, यह तो ठगाने का काम है) मेरे पिताजी ने तुम्हारी इस कपट को पहले नही जाना। जिस रूप से तुमने दान लिया उसी पहले के रूप को ही लेकर तुमसे अपेक्षित तीन पग भूमी को माप लो'' बलि पुत्र नमुचि के ऐसा कहने पर, अपने दुराग्रह को नही छोडनेवाले उस नमुचि को आकाश में घुमानेवाले, हे उज्ज्वल मकुटधारिन्। मेरा आलिंगन करो, आलिंगन करो; हे वेंकटाद्रि में विराजमान भगवान! आलिंगन करो, आलिंगन करो!!

पेरियाळ्वार तिरुमोळि के २-६-९वें पाशुर में श्री बालकृष्ण को श्री वेंकटाद्रि का स्वामी बताया हैं।

पेरियाळ्वार तिरुमोळि के २-७-३वें पाशुर में श्री बालकृष्ण को श्री वेंकटाद्रि का निवासी बताते हुये यशोदाभाव में श्री विष्णुचित्त आळ्वार ऐसे गा रहे हैं... हे गोपों के महलों में ऊपर के मंजलों में चढकर

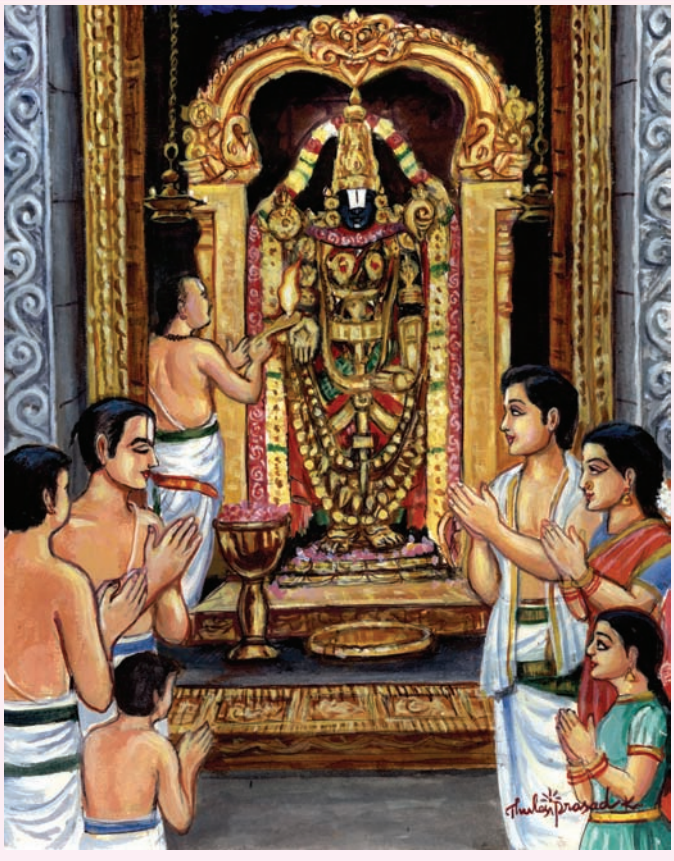

वहाँ गोपियों के अंत:पुर में घुसकर उधर एकांत में रहती हुई उनकी चोला, वोढनी, साडी इत्यादि वस्त्रों को फाडते हुए और ऐसी ही नानाप्रकार की चेष्टा करने में नित्य निरत! हे उत्तुंग शेष शैल में निवास करने में आदरवाला! कृष्ण! दमनक और पाटली पुष्प का धारण करने के लिए इधर आ जा।

पेरियाळ्वार तिरुमोळि के २-९-६वें पाशुर में श्री बालकृष्ण को श्री वेंकटाद्रि का स्वामी बताते हुये यशोदाभाव में श्री विष्णुचित्त आळ्वार ऐसे गान रहे हैं...

(यशोदा जी श्रीकृष्ण को पुकारती हैं-) हे लीला कुतूहल भरित कृष्ण! हे गोवर्धनधारिन! हे घटनर्तन प्रवीण! हे वेदवेद्य, वेंकटाद्रि का स्वामिन्! हे परमचतुर, वासुदेव! दूसरा घर जाने की इच्छा को छोड़कर इधर आ जा। ऐसा मत कहा करो कि मैं नहीं आवूँगा। हे वत्स! इधर आ

जा। तुम्हारे बारे में दूसरों से कहे जानेवाले कटु वचनों का मैं सहन नहीं कर सकती हूँ। अतः तुम शीघ्र यहाँ आ जा।

अपने प्रबंध के अंतिम दशक में प्रार्थित ब्रह्मानंद की प्राप्ति को बताते हुए गाते हैं (गाथा) -

शेन्नियोङ्गु तण् तिरुवेङ्गडमुडैयाय्, उलहु
तन्नै वाळनिन्न नम्बी दामोदरा शदिरा,
एनैयुमेन्नुडैमैयैयुम् उन् चक्करप्पोरियोत्तिक्कोण्डु,
निन्नरुळे पुरिन्दिरुन्देन् इनियेन् तिरुक्कुरिप्पे ।।५-४-१।।

इस गाथा के भाव- हे ऊँचे शिखर वाले एवं सुशीतल वेंकटाचल में विराजमान भगवान! समस्त लोकों का उद्धार करने में प्रवीण, शुभगुणपरिपूर्ण, हे दामोदर! हे चतुर, हरे! मैं अपने को एवं अपनी सब माल को आपके चक्र से अंकित कर, आपकी कृपा का ही प्रतीक्षा रहता हूँ। हे प्रभो! आपकी मरजी कैसी है?

इस दशक के तीसरे पाशुर में आळवार कहते हैं कुलदैवमे। भले ही सीधे से इस पाशुर में श्री वेंकटेश भगवान का सम्बोधन नहीं हैं, क्योंकि दशक के प्रथम पाशुर में तिरुवेङ्गडमुडैयान् (श्री वेंकटेश भगवान) को सम्बोधित किया हैं, इसके बाद अब तक किसी और दिव्यदेश को सम्बोधन नहीं किया हैं, इस तीसरे पाशुर में भी उन्हें ही सम्बोधन कर रहे हैं ऐसा मान सकते हैं। इस प्रकार समस्त प्रपन्न कुल के कुल देव श्री वेंकटेश भगवान ही हैं ऐसा दिव्य उपदेश श्री पेरियाळवार बता रहें हैं।

सरस्वती देवी

- श्रीमती जे.शैलजा
मोबाइल - ९०००४००९४५

सरस्वती देवी की प्रार्थना

या कुंदेंदुतुषारहारधवला
या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदंडमंडितकरा
या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः
सदा वन्दिता
सामां पातु सरस्वती भगवती
निःशेषजाड्यापहा।।

नारद मुनि ने मूल प्राकृतिक देवताओं को प्रार्थना करने का विधान और पूजा करने के विधान के बारे में नारायण से इस प्रकार पूछता है कि ''हे! प्रभु पृथ्वी पर किन-किन देवता लोग है और उनको कौन-कौन किस प्रकार पूजा-पाठ करके धन्य हुए हैं। उस देवताओं के श्लोक-ध्यान-जप-तप-महत्यों के बारे में मुझे बताइये।'' नारद की बातें सुनकर नारायण ने कहा कि- हे! नारद सुन लीजिए एक ही मूल-प्रकृती की सृष्टि करने के लिए ''दुर्गा-राधा-लक्ष्मी-सरस्वती-सावित्रि'' पाँच रूपों में विभक्त हुई हैं। इन देवियों की प्रतिभा प्रभाव, पूजा-पाठ, दिव्यचरित, परमअद्भुत-मंगलप्रद होकर बैठे हैं। इसी प्रकार ''श्रीकालि-वसुंधरा-गंगा-षष्टि-मंगला-चंडिका-तुलसी-मानसा-निद्रा-स्वाहा-स्वाधा-दक्षिण'' नामों से प्राकृतिक देवताओं के शुभ चरित्र भी पुण्यप्रद है।

सरस्वती देवी मानव जीवि को ज्ञान प्रदान करके बुद्धि विकास देते है। तद्वारा अच्छा-बुरा को जानने की क्षमता मानव को मिलती है। माघ शुद्ध पंचमी के दिन, विद्यारंभ के समय संसार के सर्व मानव पूजा-पाठ करेंगे। इसी रूप से आप को यह वरदान दे रहा हूँ। कण्व शाखा के अनुसार कलश पर या पुस्तक पर आप को आह्वान करके ध्यान करते हैं।

- - -

इस प्रकार उस दिन से त्रिमूर्ति, (साधु) मुनींद्र सनकसनंदादि लोग, अनंता, सब देवता गण, मानव-सरस्वती देवी की प्रार्थना कर रहे हैं। सरस्वती देवी की पूजा करने के दिन प्रातःकाल स्नान करके पवित्र रूप से, मन में भक्ति भाव से कलश को स्थापित करना है। पहले गणेशजी की पूजा करने के बाद ही सरस्वती देवी की उपासना करना

है। इसके बाद षोडशोपचारों से देवी को पूजित करके नैवेद्य समर्पण करना है। सरस्वती देवी का मुख्य नैवेद्य इस प्रकार है- मलय (या मरुकन), दही, दूध, खीर, तिलगोलिया, गन्ना, गुड से बने हुए खाना, मधु-मिठाई, सफेद फसल जैसे चावल, चिउडा, रव्वलड्डु, नमक, घी से बने हुए हविष्यान्नम, चावल और गेहू आटा को मिलाकर घी से बने हुए पदार्थ, केले से बने हुए पदार्थ, अमृत भोजन, नारियल, नारियल की पानी, बेर, समयानुसार मिले हुए फल सरस्वती देवी को निवेदन करना है। गंध, चंदन, सफेद फूल, सफेद वस्त्र (कपडा), सफेद शंख सरस्वती देवी को समर्पण करना है। सफेद फूलों की माला, सोने के आभरणों से सरस्वती देवी को अलंकृत करना है। इसके बाद इस प्रकार स्मरण करना है।

ॐ श्री सरस्वती शुक्लवर्णां सस्मितां सुमनोहराम्।।
कोटिचंद्रप्रभामुष्टपुष्टश्रीयुक्तविग्रहाम्।
वह्निशुद्धां शुकाधानां वीणापुस्तकमधारिणीम्।।
रत्नसारेंद्रनिर्माणनवभूषणभूषिताम्।
सुपूजितां सुरगणैब्रह्मविष्णुशिवादिभिः।।
वंदे भक्तया वंदिता च मुनींद्रमनुमानवैः।

किस मानव को यह मंत्रोपदेश होता है वह हर समय स्मरण करना है। इसके बाद कवच को पढ़ना है। सरस्वती मंत्र को अपने-अपने गुरु के उपदेशानुसार स्मरण करना है। यह मंत्र वेदों में अलग है - ''श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा''।

ये अष्ठाक्षरी मंत्र मूल है। यह मंत्र कल्पवृक्ष की तरह है। पूर्वकाल में नारायण इस मंत्र को आदिकवि वाल्मीकि मुनींद्र को उपदेश दिये थे। भृगुमहर्षि तालाब के किनारे सूर्यग्रहण के समय

शुक्राचार्य को मंत्रोपदेश दिये थे। चंद्रग्रहण के समय मरीचि बृहस्पति को उपदेश दिये थे। इस प्रकार परंपरा के अनुसार विविध देवताओं से विविध व्यक्तियों (या) मुनियों को उपदेश मिला था। इस मंत्र को चार लाखों बार स्मरण करने से सर्व सिद्धियाँ मिलती हैं। सरस्वती कवच को पाँच लाखों बार मनन करने से विश्व विजेता और सर्व सिद्ध शक्ति संपन्न हो जाते हैं।

सरस्वती कवच को पढ़नेवाले लोग एक महान कवि, महान वक्ता या बृहस्पति के समान होंगे। सरस्वती देवी भारत देश में एक नदी के रूप में भी बह रही है। सरस्वती देवी एक पुण्य स्वरूपिणी, पुण्यप्रदायिनी, पुण्यतीर्थ स्वरूपिणी है। भक्त, सरस्वती नदी के आस-पास रह कर उस की सेवा कर रहे हैं।

ये नदी में प्राण छोडने से वैकुंठ में विष्णु भगवान के सभा में ज्यादा वर्ष रहने का अवसर मिलता है। इस नदी में नहाने से मानवों के पाप दूर हो जाते हैं।

सरस्वती की ब्रह्म की पुत्री तथा पत्नी दोनों रूपों में कल्पना की गयी है। यह पाकड़वृक्ष से उत्पन्न ब्रह्म की पुत्री है। ये समस्त विद्याओं, संगीत, वाणी की अधिष्ठात्री देवी हैं। इनका एक नाम वाणी या वाक् भी है। हरिजिह्वा, ब्रह्मपुत्री, सुदर्शन-जननी आदि नाम भी हैं। संस्कृत तथा उसकी लिपि के आविष्करण का श्रेय इन्हें प्राप्त है। ये पहले यज्ञदेवी के रूप में प्रतिष्ठित थीं। महाभारत में ये दक्षकन्या हैं। इनका वाहन हंस है और हाथ में वीणा है। ये वीणापाणि के नाम से प्रसिद्ध हैं।

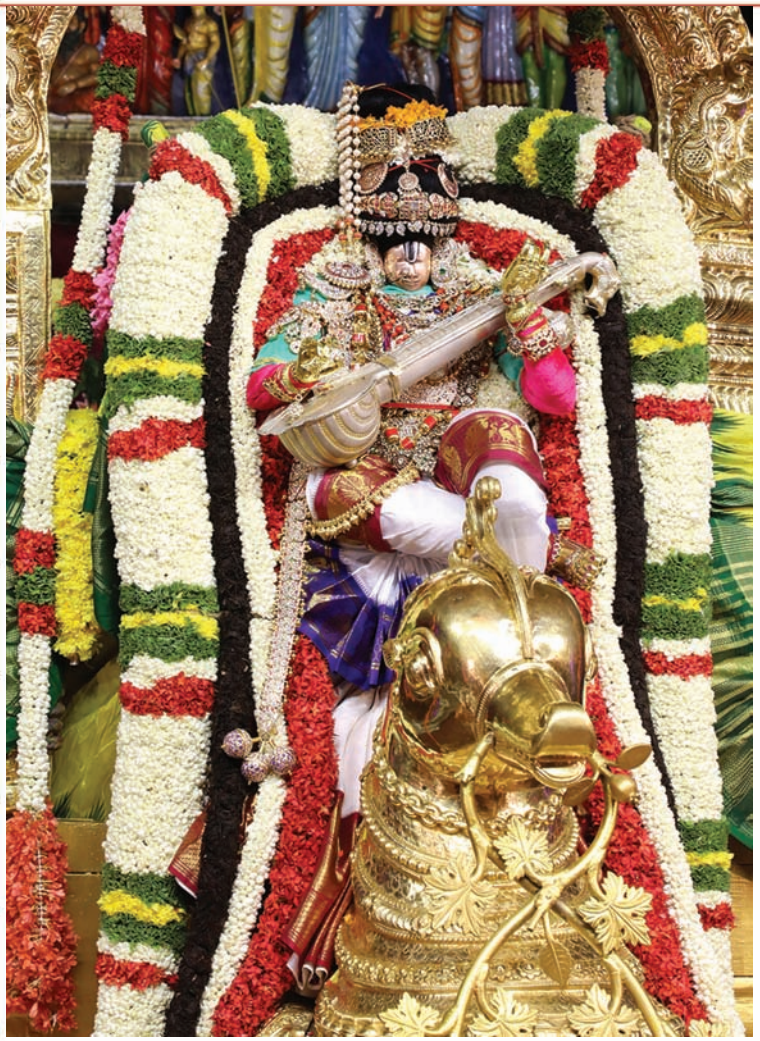

नवतीर्थों में से एक नदी के रूप में मानी गयी है। 'सरस ऊर्मिवाली' यही शब्दार्थ है। यह ब्रह्मावर्त प्रदेश की सीमा पर थी। इसे कुरुक्षेत्र में बहा लाने का श्रेय मंकणक ऋषि को है। प्रयाग में गंगा तथा यमुना के संगम पर अंतः सलिला हो बहने की कल्पना की गयी है। इसका तटवर्ती प्रदेश सारस्वत प्रदेश कहलाता था। सरस्वती के तट पर ही इंद्र ने वृत्रासुर को मारा था। इस कारण ऋग्वेद में सरस्वती को वृत्रघ्नी कहा गया है।

स्कंदपुराण के अनुसार सरस्वती के आस-पास का प्रदेश द्वारावती हैं। सरस्वती नदी देवों, ऋषियों से पूजित है। मनोहरा, सुवेणु आदि इसके अन्य नाम हैं। महाभारत युद्ध के समय निर्लिप्त बलराम ने इस नदी का तीर्थाटन किया था। सरस्वती में अनेक तीर्थों की कल्पना की गयी है।

दक्ष-शाप के कारण, चंद्रमा इसी नदी में स्नान करके अपनी खोयी हुई कला को पुनः प्राप्त किया था।

तिरुमल श्री बालाजी के वार्षिक ब्रह्मोत्सव और नवरात्रि ब्रह्मोत्सव के वाहन सेवाओं के समय में श्री मलयप्पस्वामी सरस्वती देवी के अलंकार में हंसवाहनारूढ़ होकर तिरुमाडावीथियों में भक्तों को दर्शन देते हैं।

श्री सरस्वती द्वादशनाम स्तोत्रम्

सरस्वती त्वियं दृष्ट्वा वीणापुस्तक धारिणी।

हंसवाहसमायुक्ता विद्यादानकरी मम।।

प्रथमं भारतीनाम द्वितीयं च सरस्वती।

तृतीयं शारदादेवी चतुर्थं हंसवाहिनी।।

पंचमं जगती ख्याता षष्ठं वागीश्वरी तथा।

कौमारी सप्तमं प्रोक्ता अष्टमं ब्रह्मचारिणी।।

नवमं बुद्धिदात्री च दशमं वरदायिनी।

एकादशं क्षुद्रघंटा द्वादशं भुवनेश्वरी।।

ब्राह्मी द्वादश नामानि त्रिसंद्यं यः पठेन्नरः।।

सर्वसिद्धिकरी तस्य प्रसन्ना परमेश्वरी।

सा मे वसतु जिह्वाग्रे ब्रह्मरूपा सरस्वती।।

।। इति श्री सरस्वती द्वादशनामस्तोत्रम् ।।

गरुड वाहन वैभव

- डॉ.जी.मोहन नायुडु
मोबाइल - ९५०२४४७६१७

भगवान विष्णु का वाहन गरुड, साँपों का शत्रु है। इसलिए यह कहा जाता है कि गरुड विष को खत्म करनेवाला अर्थात् आतंक को नष्ट करनेवाला पक्षी है। गरुड हिंदू धर्म के साथ ही बौद्ध धर्म में भी महत्वपूर्ण पक्षी माना गया है। गरुड के नाम से एक पुराण, ध्वज, घंटी और एक व्रत भी है। महाभारत में गरुड ध्वज था। घर में रखे मंदिर में गरुड घंटी और मंदिर के शिखर पर गरुड ध्वज होता है। गरुड पुराण में मृत्यु के पहले और बाद की स्थिति के बारे में बताया गया है। गरुड पुराण में ज्ञान, धर्म, नीति, रहस्य, व्यावहारिक जीवन, आत्मा, स्वर्ग, नरक और अन्य लोकों का वर्णन मिलता है। इसमें भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, सदाचार, निष्काम कर्म की महिमा के साथ यज्ञ, दान, तप, तीर्थ आदि शुभ कर्मों में सर्व साधारण को प्रवृत्त करने के लिए अनेक लौकिक एवं पारलौकिक फलों का वर्णन किया गया है। हिंदू धर्मानुसार जब किसी के घर में व्यक्ति की मृत्यु होती है तो गरुड पुराण का पाठ रखा जाता है।

पक्षियों में गरुड को सबसे श्रेष्ठ माना गया है। यह समझदार और बुद्धिमान होने के साथ-साथ तेज गति से उडने की क्षमता रखता है। गरुड के बारे में पुराणों में अनेक कथाएँ मिलती हैं। प्राचीन वैष्णव मंदिरों के द्वारा मालुम पडता हैं की एक ओर गरुड और दूसरी ओर हनुमानजी की मूर्ति होती थी। विष्णु ब्रह्मांड का पालन करने वाले हैं। लोकरक्षा में आनेवाली बाधाओं तथा विघ्नों को उन्हें हटाना होता है। दूषित वासनाओं वाली, अपना ही स्वार्थ देखने वाली, मिथ्या अभिमानी, दूसरों को दुःख देने में सुख मानने वाली, हिंसा, असत्य, इन्द्रिय-परायणता में रुचि रखने वाली आसुरी शक्ति से साधु वृत्ति वाले, सर्वहित परायण महात्माओं की रक्षा करना उनका मुख्य कार्य है। ''धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।'' की घोषणा

करनेवाले इस जगत में अव्यवस्था और लूटपाट, अनाचार, व्यभिचार, असत्य, नास्तिकता, स्वेच्छाचार को फैलानेवाले दूषित कीटानुओं का विनाश, जगत की व्यवस्था और शांति के लिए परम आवश्यक है। भगवान विष्णु के इसी कार्य का सर्वत्र उल्लेख है। 'गृ निगरणे' धातु से युक्त गरुड शब्द वस्तुतः दूषित जीवों के निगलनेवाले अर्थ में प्रयुक्त हो सकता है। वेदमय पक्षों से संपन्न यह गरुड जहाँ वेदोक्त कर्म-ज्ञानरूपी वायु का संचार करता है, वहाँ वह अपने तीक्षण पैरों से बडे से बडे दुष्ट जीवों का भी विनाश कर देता है। 'नागान्तको विष्णु रथः सुपर्णः पन्नगाशनः' गरुड के इन नामों में जहाँ उन्हें वेदमय पक्ष होने के कारण सुपर्ण, विष्णु वाहन होने से 'विष्णुरथ' कहा गया है, वहाँ उन्हें 'नागान्तक' और 'पन्नगाशन' भी कहा गया है। कुटिल गतिवाले विषधर जीवों को पन्नग, सर्प आदि नामों से पुकारा जाता है। हृदय में विष रखनेवाले कुटिल स्वभाव वाले जीवों से कभी भी सृष्टि का कल्याण नहीं होता। ऐसे जीव संसार की सुव्यवस्था और शांति में बाधक हैं।

दूसरों को पीडा देना ही धर्म माननेवाले जीवों का नाश करना बहुत आवश्यक और कल्याणकारी भी है। दूषित वासनाओं तथा संस्कारों, आचार-विचारों को दूर करके शुद्ध वासनाओं, आचार-विचारों की रक्षा करना इसका मुख्य उद्देश्य है। विषैले सर्प के समान सांसारिक विषयों में दौड लगाने से संसार में शांति संभव नहीं है। 'विषयान विषवत् त्यज' का तात्पर्य है कि विषय विष के वासनारूपी दाँतों को तोड दो। विषयों के अमर्यादित उपभोग में विष भरा हुआ है। उसमें शरीर की और आत्मा की भी रक्षा नहीं होती है। विषय विष और इन्द्रियादि का जितना आवश्यक एवं कम संबंध होगा, मनुष्य उतना ही बहिर्मुखी वृत्तियों से रहित एवं अन्तर्मुख होकर आसक्तियों से रहित हो जायेगा। विषयासक्ति का स्वार्थ न होने से जीव की सारी प्रवृत्तियाँ कल्याणमय होंगी। विषयासक्ति रूपी विष दूर हो जाने पर प्राणी शांत एवं स्वस्थ हो जाता है। सांसारिक विषयों को समझने के बदले वह अपने को समझता है। महात्मा गरुड उन विषय रूपी कुटिल गति सर्पों के भक्षक और नाशक है। भगवान विष्णु जिस प्रकार संसार के विषैले जीवों को हटाकर सृष्टि की रक्षा करता है उसी प्रकार गरुड भी विषैले सर्पों का नाश करता है। अतः भगवान विष्णु के कार्यों में और उनके वाहन गरुड के कार्यों में समता है और गरुड विष्णु का वाहन होना भी युक्ति संगत है।

गरुड सेवा

हर माह के पूर्णिमा को गरुड सेवा होती है और श्रावण शुद्ध पंचमी (गरुड पंचमी) के अवसर पर गरुड सेवा का आयोजन तिरुमल के पहाड पर होता है। वार्षिक ब्रह्मोत्सव, नवरात्रि ब्रह्मोत्सव के संदर्भ में भी तिरुमल की तिरुमाडावीथियों में भक्तों के दर्शनार्थ गरुड वाहन का विचरण होता है। भगवान श्री वेंकटेश्वर (बालाजी) के ब्रह्मोत्सवों में गरुड सेवा बहुत प्रसिद्ध है। वार्षिक ब्रह्मोत्सवों, नवरात्रि ब्रह्मोत्सवों के संदर्भ में पाँचवें दिन रात को बहुत वैभव के साथ गरुडोत्सव मनाया जाता है।

''पंचम दिवसे ... द्वितीयं रजनौ यानं वेदवेदस्य वै हरेः।
बभूवच स्वयं साक्षात् छंदोमूर्तिः खगेश्वरः।।''

इस प्रकार भविष्योत्तर पुराण में श्री वेंकटेश्वर (बालाजी) के ब्रह्मोत्सव वाहन क्रम में पाँचवें दिन रात को 'वेदवेद्य' श्री वेंकटेश्वर-वाहन के रूप में 'छंदोमूर्ति' गरुड का वर्णन किया गया है। यहाँ 'वेदवेद्य और छंदोमूर्ति' ये दो शब्द महत्वपूर्ण हैं। नवरात्रि ब्रह्मोत्सवों के क्रम में पाँचवें दिन रात को चलनेवाली गरुड सेवा का वर्णन करना कठिन है। भक्तजनों का विश्वास है कि गरुड वाहन पर आसीन भगवान श्री वेंकटेश्वर का दर्शन करने से मोक्ष की सिद्धि सरल होती है।

गरुड वेदमय स्वरूप है। इसलिए यामुनाचार्यजी ने चतुःश्लोक में ''वेदात्मा विहगेश्वरः'' कहकर वेदमूर्ति के रूप में गरुड का वर्णन किया। वेद भी गरुड को वेदात्मा के रूप में स्वीकार करता है। उसी प्रकार यजुर्वेद में भी वर्णित है कि गरुड वेदमय स्वरूप है। वेदमय स्वरूप से युक्त गरुड पर आसीन होकर भक्तजनों को दर्शन देने में जो रहस्य है, वह 'शास्त्रयोनित्वात्' नामक ब्रह्मसूत्र में बादरायण ने बताया कि भगवान के बारे में जानकारी प्राप्त करना है तो हमारा पहला प्रमाण शास्त्र ही है, शास्त्र अर्थात् वेद। वेद भगवान का शासन है। इसलिए समस्त शास्त्रों में उत्तम है वेद। इस सूत्र का तात्पर्य है कि वेदशास्त्र साधना के द्वारा भगवान के यथार्थ तत्व को ग्रहण करना है।

गरुड के दोनों हस्तपद्मों में भगवान श्री वेंकटेश्वर अपने दोनों पैरों को रखकर भक्तजनों को अपना दर्शन देने में एक विशेषार्थ है, संस्कृत वेद के समान द्रविड वेद भी है। इन दोनों वेदों में प्रतिपादित परमतत्व ''भगवान के पादपद्म ही आश्रय है'' यह सूचित करना है। 'वेदात्मा-विहगेश्वरः' अर्थात् गरुड दोनों वेदों का प्रतीक है। इसी कारण ब्रह्मोत्सवों में गरुड सेवा को उतना महत्व दिया गया है। वामन पुराण के वेंकटेश्वर माहात्म्य वृत्तांत में बताया गया है - तिरुमलगिरि पर बहुत दिनों तक तप करनेवाले शंखराज, अगस्त्य, ब्रह्म, रुद्र, शुक्राचार्य, बृहस्पति आदि मुनियों को पहली बार गरुडासीन भगवान का दर्शन मिला। व्यास महर्षि ने भगवान का वर्णन इस प्रकार किया-

''ददृशु स्ते समारूढम् वैनतेयम् महाबलम्।
हरि हेमाद्रि शिखरे नीलमेघमिवस्थितम्।।''

गरुडोत्सव से संबंधित दो शिलालेख प्रसिद्ध हैं - पहला - (सन् १५३० ई.) ताल्लपाका तिरुमलै अय्यंगार शिलालेख (१५४), दूसरा - (सन् १५८३ ई.) एट्टूरु तिरुमलै कुमार ताताचार्यर शिलालेख (१५५)। प्रथम में गरुडोत्सव पाँचवें दिन होने की बात कही गयी है और दूसरे में अलंकरण के नियम हैं। ताल्लपाका अन्नमय्या ने भी अपने संकीर्तनों में गरुड की कीर्ति गायी।

लोकनायक श्री वेंकटेश्वर के पादपद्मों को अपने हस्तपद्मों पर रखकर भक्तों के सम्मुख आनेवाले गरुड वाहन का दर्शन करनेवाले भक्त सच्चे अर्थों में धन्य हैं। कालसर्प दोष, विवाह की समस्या, संतान का नष्ट इत्यादि समस्त बाधाएँ दूर होकर भक्त सुख और शांति से रहते हैं। गरुड का सेवाभाव, मातृभक्ति, प्रभुभक्ति-परायणता, निस्वार्थता, निष्कलंक भाव, उपकार की भावना आदि उत्तम गुण समाज के लिए प्रेरणादायक हैं। इसी कारण गरुड सेवा के लिए ब्रह्मोत्सवों में एक विशिष्ट स्थान दिया गया है।

सेनै-मुदलियार
(विष्वक्सेन जी)

- श्रीमती शकुंतला उपाध्याय
मोबाइल - ९०३६८८१९०८६

तिरुनक्षत्र - अश्विन मास, पूर्वाषाढा नक्षत्र

ग्रन्थ सूची - विष्वक्सेन जी संहिता

श्री विष्वक्सेन जी नित्यसूरि है। भगवान के प्रधान सेनापति है, भगवान कि आज्ञा से नित्य विभूति और लीला विभूति पर अपना नियंत्रण रखते है। वे कई नामों से जाने जाते है जैसे - सेनै मुदलियार, वेत्रधर, सेनाधिपति, वेत्रहस्तर इत्यादि। उनकी पत्नी का नाम सूत्रवति है। वे शेष आसनर के नाम से भी जाने जाते है क्योंकि वे ऐसे पहले नित्यसूरि है जिन्हें भगवान का शेषप्रसाद सर्वप्रथम इन्हें ही निवेदित किया जाता है।

हमारे पूर्वाचार्यों के अनुसार पेरिय पिराट्टि विष्वक्सेन जी की आचार्य है और आळवार संत भी इनके शिष्य हुए है। बतलाते हैं की भगवान नित्य-लीला विभूति के कार्यों का नियंत्रण श्री विष्वक्सेन जी को दे रखा है और भगवान अपने स्वधाम में भक्तगणों और नित्यसूरियों के कैंकर्य का आनन्द लेते है। पूर्वाचार्यों के अनुसार श्री विष्वक्सेन जी एक मन्त्री का अभिनय करते है और श्री भगवान एक राजकुमार का अभिनय करते है।

श्री यामुनाचार्य ने अपने स्तोत्ररत्न (४२वें श्लोक) में भगवान और विष्वक्सेन जी के सम्बन्ध को कुछ इस प्रकार दर्शाया है।

त्वदीय भुक्तोज्झित शेष भोजिना त्वया
निसृष्टात्मभरेण यद्यथा।
प्रियेण सेनापतिना न्यवेदि तत्
तथाऽनुजानन्तमुदारवीक्षणैः।।

इस श्लोक में श्री यामुनाचार्य भगवान को सम्बोधित करते हुये श्री विष्वक्सेन जी कि प्रशंसा करते है और भगवान के उभय साम्राज्य जो श्री विष्वक्सेन जी के नियंत्रण में है उसी दृश्य का आनन्द लेते है।

भावार्थ (संक्षिप्त) - इस श्लोक में श्री यामुनाचार्य स्वामीजी कहते हैं की विष्वक्सेन जी पेरुमाल् भगवान की आज्ञा से उनके उभय साम्राज्य के नियंत्रक है और जो भगवान का शेष प्रसाद सबसे पहले प्राप्त करते है, और उभय विभूतियों- नित्यसूरि और लीला विभूति दोनों के ही प्रिय है। श्री विष्वक्सेन जी भगवान के कार्यों को (भगवान के कटाक्ष मात्र से) समझकर भलि-भांति निभाते है। श्री विष्वक्सेन जी भगवान के आंखों से समझ जाते हैं की उनकी क्या इच्छा है और वे अपने निपुणता से उस कार्य को निभाते है।

श्री विष्वक्सेन जी का तनियन -

श्री रंगचँद्रमसम् इन्द्रियाविहर्तुम्
विन्यस्यविस्वचिद चिन्नयनाधिकारम्।
यो निर्वहत्य निसमन्गुळि मुद्रयैव
सेनान्यमन्य विमुकास्तमसि श्रियाम।।

श्री पिळ्ळै लोकाचार्य

- श्री कृष्णकुमार. गुप्ता
मोबाइल - ७०७१९९४२८८

तिरुनक्षत्र - तुला मास, श्रवणा नक्षत्र

अवतार स्थल - श्रीरंग

आचार्य - श्रीकृष्णपाद स्वामीजी

शिष्यगण - कूर कुलोत्तम दास, विळान चोलै पिळ्ळै, तिरुवाय्मोळि पिळ्ळै, मणप्पाक्कतु नम्बि, कोट्टुरण्णर, तिरुप्पुट्कुळि जीयर, तिरुकण्णन्गुडि पिळ्ळै, कोल्लि कावलदास इत्यादि

परमपद प्राप्त स्थल - ज्योतिष्कुडि (मधुरै के पास)

ग्रंथ रचनासूची - याद्रिच्छिक पडि, मुमुक्षुप्पडि, श्रियःपति, परंत पडि, तनि प्रणवम्, तनि द्वयम्, तनि चरमम्, अर्थ पंचकम्, तत्त्वत्रयम्, तत्त्वशेखरम्, सारसंग्रहम्, अर्चिरादि, प्रमेयशेखरम्, संसारसाम्राज्यम्, प्रपन्नपरित्राणम्, नवरत्तिनमालै, नवविधासंबंधम्, श्रीवचनभूषणम् इत्यादि।

श्रीरंग में श्री पिळ्ळै लोकाचार्य नम्पिळ्ळै के विशेष अनुग्रह से श्रीकृष्णपाद स्वामीजी को पुत्र के रूप में प्रकट हुए। जिस प्रकार अयोध्या में श्रीराम भगवान और लक्ष्मण, गोकुल में श्रीकृष्ण भगवान और बलराम बडे हुए उसी प्रकार पिळ्ळै लोकाचार्य और उनके छोटे भाई अळगिय मणवाळ नायनार श्रीरंग में बडे हुए। दोनों भाई हमारे सत्सांप्रदाय के कई आचार्य - नम्पिळ्ळै, पेरियवाच्चानपिळ्ळै, वडुक्कु तिरुवीधिपिळ्ळै इत्यादि के विशेष अनुग्रह के पात्र हुए। उन्होंने अपने पिता के चरण कमलों का आश्रय लेकर सत्सांप्रदाय के बारे में सीखा। इन दोनों भाईयों ने उनके जीवन काल में नैष्टिक ब्रह्मचर्य पालन करने का शपथ लिया और यह उन दोनों आचार्यसिंहों का विशेष गुण था।

इस भौतिक जगत में शोषित जिवात्माओं के प्रति अत्यन्त कारुण्य भावना रखते हुए श्री पिळ्ळै लोकाचार्य ने भगवान श्रीमन्नारायण की असीम कृपा से कई सारे ग्रंथों की रचना किये जो केवल हमारे सत्सांप्रदाय के बहुमूल्य अर्थों को सरल संस्कृत तमिल भाषा में दर्शाता है और यह केवल एक आचार्य से शिष्य को व्यक्तिगत आधार पर प्राप्त होता था।

श्री पिळ्ळै लोकाचार्य अन्ततः हमारे सत्सांप्रदाय के अगले मार्ग दर्शक हुए और वे अपने शिष्यों को श्रीरंग में सत्सांप्रदाय के विषयों पर आधारित ज्ञान का शिक्षण दे रहे थे। एक बार मणप्पाक्कतु नम्बि श्री वरदराज भगवान के

पास जाकर उनसे शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त करते है। श्री वरदराज भगवान यह स्वीकार कर उन्हें शिक्षण देने लगे। परंतु श्री वरदराज भगवान बीच में प्रशिक्षण स्थगित कर मणप्पाक्कतु नम्बि को आदेश देते है कि वह श्रीरंग जाये जहाँ इनका स्थगित प्रशिक्षण पुनः आरंभ करेंगे। यह जानकर मणप्पाक्कतु नम्बि खुशी खुशी श्रीरंग की ओर निकल पडे। श्रीरंग में स्थित काट्टळिगय सिंगर मंदिर पहुँच कर वह श्री पिळळै लोकाचार्य के कालक्षेप घोष्टि को देखते है। एक स्तंभ के पीछे छुपकर वह प्रवचन को सुनते हुए उन्हें आश्चर्य होता है कि वह अपने स्थगित प्रशिक्षण को पुनः सुन रहे थे। यह जानकर वह उनके समक्ष प्रत्यक्ष हुए और उनसे पूछा- अवरो नीर क्या आप देव पेरुमाळ है?) और पिळळै लोकाचार्य ने कहा- अवतु, येतु (जी हाँ, अब क्या करुँ) यह घटना से स्पष्ट है कि श्री पिळळै लोकाचार्य स्वयं श्री वरदराज भगवान ही है और इसे हमारे पूर्वाचार्यों ने स्वीकार किया है। एक और घटना घटी जिसका विवरण यतीन्द्रप्रणवप्रभावम् में है जो यह साबित करता है कि श्री पिळळै लोकाचार्य स्वयं श्री वरदराज भगवान ही है। श्री पिळळै लोकाचार्य अपने अन्तिम काल के दौरान, ज्योतिष्कुडि में अपने शिष्य नालुर पिळळै को उपदेश देते हैं की वह तिरुमलै आळवार को सत्संप्रदाय के व्याख्यानों में प्रशिक्षण दें। उसके बाद जब नालुर पिळळै और तिरुमलै आळवार श्री वरदराज भगवान के दर्शन हेतु गए तब श्री वरदराज भगवान ने स्वयं नालुर पिळळै को संबोधित करते हुए कहा- मैंने जिस प्रकार ज्योतिष्कुडि में तुम्हे उपदेश दिया की तुम्हे जरूर तिरुमलै आळवार को अरुलिच्चेयल् के व्याख्यानों में प्रशिक्षण दो - अब तक आपने क्यों मेरे आदेशों का पालन नही किया?

श्री पिळळै लोकाचार्य ने मुमुक्षुवों के उत्थापन हेतु भगवान कि असीम कृपा से कई ग्रंथों की रचना किये। उन में से अठारह ग्रंथ केवल हमारे सत्-संप्रदाय के विशेष दृष्टिकोण को दर्शाता है (जैसे - रहस्य त्रयम्, तत्त्व त्रयम्, अर्थ पंचकम् इत्यादि) जो नम्माळवार के तिरुवाय्मोळि पर आधारित है। इनमें से निम्नलिखित श्रीवैष्णवों के लिये सबसे अधिक महत्वपूर्ण है -

१. मुम्मुक्षुप्पडि - यह एक रहस्य ग्रंथ है जिसमें श्री पिळळै लोकाचार्य ने रहस्य त्रय - (तिरुमंत्र (अष्टाक्षरी मंत्र), द्वयमहामंत्र, चरमश्लोक) का विवरण बहुत ही उत्कृष्ट और सरल सूत्रों में दिया है। इसी ग्रंथ पर श्री वरवरमुनि स्वामीजी ने टिप्पणि लिखि है। यह एक ऐसा मूल ग्रंथ है जिसके बिना प्रत्येक श्रीवैष्णव रहस्य त्रय की महिमा और वैभव कभी नही जान सकते है।

२. तत्त्व त्रय - यह ग्रंथ कुट्टि भाष्य (छोटा श्रीभाष्य) के नाम से प्रसिद्ध है। यह ग्रंथ श्रीभाष्य पर आधारित है जिसमें स्वामी पिळळै लोकाचार्य ने तीन तत्वों (चित, अचित, ईश्वर) का सारांश सरल सूत्रों में बतलाया है। और फिर श्री वरवरमुनि स्वामीजी के व्याख्यान के बिना हम इस ग्रंथ के वैभव और महिमा कदाचित नही जान पायेंगे।

३. श्रीवचन भूषण दिव्य शास्त्र - यह ग्रंथ की रचना केवल और केवल पूर्वाचार्य और आळवारों के दिव्य कथन पर आधारित है। यह ग्रंथ श्री पिळळै लोकाचार्य का महान काम है जिसमें हमारे सत् सांप्रदाय के गूडार्थों का स्पष्टीकरण है। यह ग्रंथ सत्संप्रदाय के गोपनीय अर्थों को दर्शाता है और श्री वरवरमुनि स्वामीजी इस ग्रंथ पर आधारित अपनी टिप्पणि में इसका

स्पष्टीकरण देते है। तिरुनारायणपुरत्तु आयि ने इस ग्रंथ पर टिप्पणि प्रस्तुत किये।

अनुवादक टिप्पणि - प्रत्येक श्रीवैष्णव का कर्तव्य हैं की अपने जीवन काल में एक बार इन ग्रंथों पर आधारित कालक्षेप जरूर सुने।

श्री पिळळै लोकाचार्य की महानता यह थी की उन्होंने अपने ग्रंथों की रचना सरल तमिल भाषा में किये और इन ग्रंथों को कोई भी समझने के सक्षम है अगर वह जानने के इच्छुक हो। मुमुक्षुओं के बाधावों का निष्काशन हेतु और सत्सांप्रदाय के दिव्यार्थों के विषयों को समझने की बाधा का निष्काशन हेतु उन्होंने हमारे पूर्वाचार्यों के दिव्य वचनों को (जो ईडु इत्यादि ग्रंथों से सम्मिलित है) सौभाग्य से लिखित रूप में अपने ग्रंथों में प्रस्तुत किये है। वह सबसे पहले ऐसे आचार्य है जिन्होंने हमारे पूर्वाचार्यों के प्रमाण वचनों का संरक्षण किये। इसीलिये वह प्रमाणरक्षक आचार्य के नाम से भी जाने गए। हलांकि प्रमाणरक्षक के होने के बावजूद वह प्रमेयरक्षक भी हुए (यानि जिन्होंने भगवान को बचाया) कहते है जब भगवान की असीम कृपा से श्रीरंग में सब कुछ अच्छा चल रहा था, उसी दौरान मुस्लिम राजाओं के आक्रमण की खबर फैल चुकी थी। श्रीरंग में स्थित श्रीवैष्णवों और सामान्य प्रजा को यह ज्ञात था की मुस्लिम आक्रमणकारि केवल हमारे मंदिरों पर आक्रमण करेंगे क्योंकि मंदिरों में अत्यधिक धनराशि, सोना, चाँदि इत्यादि उपलब्ध है। यह जानकर तुरंत श्री पिळळै लोकाचार्य जिन्होंने इस स्थिति को संतुलित और नियन्त्रित किया। उन्होंने अपने शिष्यों को आदेश दिया की वह सारे पेरिय पेरुमाळ के सन्निधि के सामने एक बडी दीवार खडा करे और वह श्रीनम्पेरुमाळ और उभय नाच्चियार को लेकर दक्षिण भारत की ओर निकल पडे।

वें वृद्ध अवस्था में होने के बावजूद भगवान के दिव्यमंगल विग्रह को अपने साथ ले गए। रास्ते के बीच में भगवान के दिव्यमंगल विग्रह पर सजे हुए आभूषण कुच स्थानिक चोरों ने चुरा लिया। सबसे आगे जाते हुए श्री पिळळै लोकाचार्य को जब यह ज्ञात हुआ वह तुरन्त उन चोरों के पीछे भागे और उन्होंने उन चोरों को समझाया और चोरों ने उनके चरण कमलों का आश्रय लिया और आभूषण समर्पित किया। आभूषण पाकर श्री पिळळै लोकाचार्य आगे निकल हुए।

उसके पश्चात श्री पिळळै लोकाचार्य ज्योतिष्कुडि (मधुरै के पास - अनामलै नामक पहाड की दूसरी ओर) पहुँचे। पहुँचने के बाद वृद्ध श्री पिळळै लोकाचार्य ने अपने प्राण त्याग करने की सोच से अगले दर्शन प्रवर्तक (तिरुमलै आळवार - तिरुवाय्मोळिपिळळै) को घोषित किया और कूर कुलोत्तम दासर को उपदेश देते है कि वह तिरुवाय्मोळिपिळळै को अपने प्रशासनिक कार्यों से मुक्त करें और उन्हें अगले दर्शन प्रवर्तक के कार्यों में प्रशिक्षण दे। इस प्रकार अपना भौतिक शरीर (चरम तिरुमेनि) त्यागकर परमपद कि ओर प्रस्थान किए।

श्री वरवरमुनि स्वामीजी अपने उपदेशरत्नमालै में श्री पिळळै लोकाचार्य को गौरवान्वित करते हुए उनके दिव्य शास्त्रों मे श्रीवचनभूषण को और भी अत्यधिक गौरवान्वित किये। इस दिव्य ग्रंथ में श्री वरवरमुनि स्वामीजी आळवारों के अवतारों, पूर्वाचार्यों के अवतारों, श्रीरामानुजाचार्य की कृपा तिरुवाय्मोळि पर आधारित टिप्पणियों का उल्लेख इत्यादि और श्री पिळळै लोकाचार्य का असीमित वैभव और अन्ततः श्रीवचनभूषण

दिव्यशास्त्र का वैभव और इस ग्रंथ में लिखित सूत्रों के अर्थों का सार हम सब के लिए प्रस्तुत किये। श्री वरवरमुनि स्वामीजी कहते है - प्रत्येक श्रीवैष्णव को श्रीवचनभूषण में प्रस्तुत सूत्रार्थों का पालन हमारे जीवन में करना अत्यावश्यक है और इस प्रकार पालन करने से हम सभी निश्चित रूप से श्रीरामानुजाचार्य के कृपा के पात्र होंगे। श्री वरवरमुनि स्वामीजी कहते है - अगर हमे पूर्वाचार्य के दिव्य वचनों के ज्ञान और अनुष्ठान (सदुपदेश और सात्विक जीवन) पर विश्वास नहीं है और अपने बुद्धि से खुद के अर्थ, ज्ञान, व्याख्या, तर्क इत्यादि की रचना करें तो केवल वह हमारे अज्ञान को दर्शाता है। श्री वरवरमुनि स्वामीजी जो कभी भी अपने व्याख्यानों में या कालक्षेपों में अपशब्दों का प्रयोग नहीं करते परन्तु उन्होंने कई बार मूर्ख शब्द का प्रयोग किया है क्योंकि वे यहाँ उन लोगों के निर्दयता को दर्शाते है जिन्हे पूर्वाचार्यों के श्रीसूक्तियों पर विश्वास नहीं है और इस विश्वास के बिना वे लोग श्रीवैष्णव होने का अभिनय करते है। इस प्रकार श्रीवचनभूषण पर आधारित तत्त्वसार को श्री वरवरमुनि स्वामीजी ने अपने उपदेश रत्नमालै में प्रस्तुत किया है।

श्री वेदान्ताचार्य ने एक बहुत हि सुन्दर अनोखे प्रबंध की रचना किये जिसे हम लोकाचार्य पंचाशत के नाम से जानते है जिसमें केवल और केवल श्री पिळळै लोकाचार्य को गौरवान्वित किया गया है। हलांकि श्री वेदान्ताचार्य श्री पिळळै लोकाचार्य के उम्र के तुलना में पच्चास वर्ष छोटे थे परन्तु श्री पिळळै लोकाचार्य के प्रति उनकी श्रद्धा और प्रशंसा गौरवनीय है और इस ग्रंथ का पाठ तिरुनारायणपुरम में प्रतिदिन होता है।

हम श्री पिळळै लोकाचार्य के चरण कमलों का आश्रय लेकर प्रार्थना करे की हम सभी को भगवान और अपने आचार्य के प्रती सद्भावना हो।

पिळळै लोकाचार्य का तनियन -

तुलायां श्रवणे जातं लोकार्य महामाश्रये।

श्रीकृष्णपाद तनय तत्पदाम्भोज ष पदम।।

लोकाचार्यय गुरुवे कृष्णपादस्य सूनवे।

संसारभोगिसन्दष्टजीवजीवाटवे नमः।।

तिरुमल यात्री इनका अवश्य ध्यान रखें

- ☑ तिरुमल-यात्रा के लिए निकलने के पूर्व अपने इष्ट अथवा कुलदेवता की प्रार्थना करें।
- ☑ भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने के पूर्व श्रीस्वामि पुष्करिणी में स्नान करें, श्री वराहस्वामीजी की पूजा करें।
- ☑ मंदिर के अंदर भगवान पर ही ध्यान केंद्रित रखें।
- ☑ मंदिर के अंदर पूर्णतः मौन रहें तथा ''श्री वेंकटेशाय नमः'' का उच्चारण करें।
- ☑ तिरुमल के पास स्थित पापविनाशनम् तथा आकाशगंगा पवित्र तीर्थों में स्नान करें।
- ☑ तिरुमल में रहते समय हमारे रीति-रिवाजों, आचार-व्यवहारों का पालन करें।
- ☑ अपनी भेंट हुंडी में ही डालें।
- ☑ तिरुमल मंदिर के परिसरों को स्वच्छ रखें और पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रित थैलियों का ही उपयोग करें।
- ☑ श्री बालाजी के दर्शन करते समय सांप्रदायिक वस्त्रों का धारण करना चाहिए।

श्रीवैष्णव परम्परा में भगवान श्रीमन्नारायण का मंगलाशासन करने के लिए और वैभव बढ़ाने के लिए सर्वप्रथम भगवान के नित्यसूरियों ने आल्वारों के रूप में अवतार लिया। भगवान के प्रेम में डूबकर भगवान का मंगलाशासन करने के लिए आल्वारों ने दिव्यप्रबंधों की रचना की।

ऐसे महान इन आल्वारों में श्री सरोयोगि स्वामीजी इस भूतल पर अवतरित हुये सर्वप्रथम अल्वार हैं। श्री सरोयोगि स्वामीजी से ही श्रीवैष्णव परंपरा इस भूतल पर प्रारंभ हुयी है। श्री सरोयोगि स्वामीजी के एक दिन पश्चात् श्री भूतयोगी स्वामीजी का अवतार हुआ और दो दिन पश्चात् श्री महाद्योगी स्वामीजी का अवतार हुआ। ये तीन आल्वार एकत्रित रूप में मुनित्रय (मुदल आल्वार) नाम से जानें जाते हैं। श्रीवैष्णवता की नींव इन मुनित्रयों ने ही रखी है। इन मुनित्रयों में हम प्रथमतः श्री सरोयोगि स्वामीजी का चरित्र अनुभव करेंगे।

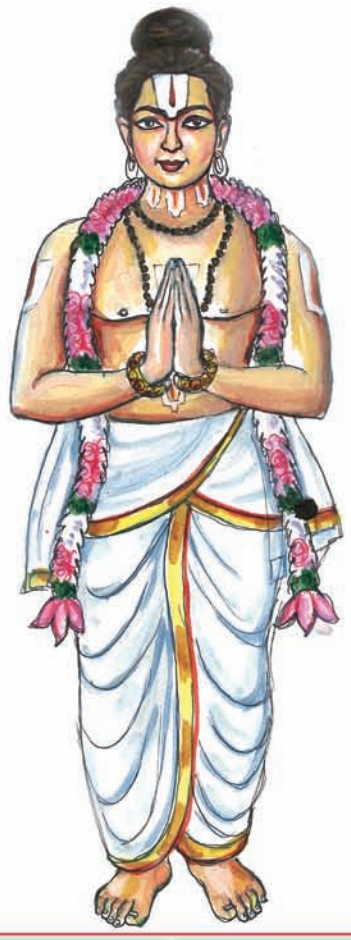

अवतार

कांच्चयाम् सरसि हेमाब्जे जातम् कासारयोगिनम्।
कलये यः श्रियः पति रविम् दीपम् अकल्पयत्।।

सात मोक्षदायिनी पुरियों में सर्वश्रेष्ठ श्री कांचीपुरी हैं जहाँ भगवान के १८ दिव्यदेश प्रसिद्ध हैं। उन १८ दिव्यदेशों में एक अष्टभुज दिव्यदेश है और उसके उत्तर में तिरुवेखा श्रीयथोक्तकारी भगवान का दिव्यदेश है। उस मंदिर के उत्तर में स्वर्णकमलों से आवृत एक सरोवर है। द्वापरयुग की समाप्ति और कलियुग के प्रारंभ में (युग संधि-संक्रमण काल में) यहाँ पर द्वापरयुग के ७,६०,९०० संवत्सर व्यतीत हो जाने पर सिद्धार्थी संवत्सर के तुला (अश्विन) मास श्रवणा नक्षत्र में स्वर्णकमल में श्री सरोयोगि स्वामीजी ने अवतार लिया। **वें भगवान के पांचजन्य शंख के अवतार हैं**। इनका अवतार माता के उदर से न होकर पुष्पगर्भ से हुआ इसलिये ये अयोनिज माने गये हैं।

श्री सरोयोगि स्वामीजी का प्रारंभ काल और वैभव

१) श्री सरोयोगि स्वामीजी स्वतः सिद्ध, परमात्मा दासरूपी मुख्य रस के रसिक, भगवद्भक्ति तथा ज्ञान वैराग्य से सदा संपन्न थे।

२) वें बचपन से अन्न-पानादि से रहित और शब्दादि विषयों से सदैव अपरिचित रहे।

३) श्री विष्वक्सेन जी श्री सरोयोगि स्वामीजी के आचार्य हुये।

पोय्गै आळ्वार

(श्री सरोयोगि आल्वार)

- श्रीमती उषादेवी. अगर्वाल
मोबाइल - ९९०३३८८००५

४) भगवान श्री लक्ष्मीकांत ने भूतल पर पधार कर श्री सरोयोगि स्वामीजी को तत्त्वार्थ ज्ञान से संपन्न करके समुचित उपदेश दिया।

५) श्री सरोयोगि ने भगवान के लिये कमल समर्पित किया और मूलमंत्र जपते-जपते अपनी सुधि भूल गये।

६) इन्हें जन्म से ही भगवान के प्रति अत्यंत प्रीति थी।

७) भगवान का परिपूर्ण अनुग्रह उन्हें प्राप्त था और उन्होंने जीवन पर्यंत भगवत अनुभव का आनन्द प्राप्त किया।

८) श्री सरोयोगि स्वामीजी मोक्षप्रद हैं।

९) उनमें सात्विक गुणों की अधिकता है।

१०) वे संसार रूपी अग्नि के नाशक हैं।

११) वें शीतल सरोवर से प्रादुर्भूत है तथा सुंदर वचन बोलनेवाले हैं इसलिये वें सरोयोगि कहलाते हैं।

१२) श्री सरोयोगि स्वामीजी **श्री कासारयोगि, श्री सरोमुनींद्र, श्री पोयूगै आळ्वार** इस नामों से भी जाने जाते हैं।

मुनित्रय (मुदल आल्वार) मिलन

एक समय भगवान की विशेष कृपा से उनकी तिरुक्कोवलूर दिव्यदेश में श्री भूतयोगी स्वामीजी और श्री महद योगी स्वामीजी से एक अँधेरी कुटिया में भेंट हुई। उस अँधेरी कुटिया में साक्षात् भगवान इन तीनों आल्वारों को दर्शन देने पधारें। उस समय सरोयोगि आळवार ने भगवान का दर्शन करने के लिए संसार रूपी दीपक, समुद्र रूपी तेल और सूरज रूपी रौशनी से दीप प्रज्वलित किया। उस समय से वे तीनों आल्वार तिरुक्कोवलूर आयन और अन्य अर्चावतार भगवान के स्वरूपों का साथ-साथ अनुभव करते हुए इस लीला विभूति में अपना जीवन बिताये। उन्होंने साथ मिलकर और भी कई दिव्यदेशों/क्षेत्रों के दर्शन किये। इन्हें ''**ओडि तिरियुम योगीगळ**'' अर्थात् निरंतर तीर्थ यात्रा में रहने वाले योगि भी कहा जाता हैं।

आचार्य आल्वारों द्वारा श्री सरोयोगि स्वामीजी का वैभव प्रकाशन

१) श्री शठकोप स्वामीजी कहते हैं, ''भगवान की महानता/प्रभुत्वता को प्रथम बार सुमधुर तमिल भाषा में इन्होंने ही प्रकाशित किया हैं।''

२) श्री कलिवैरिदास स्वामीजी, इन्हें ''**सेंतमिळ पाडुवार**''- मधुर तमिल भाषा में गाने वाले और ''**इंकवि पाडुम परमकविगळ**'' - तमिल भाषा के महान पंडित कहकर संबोधित करते हैं।

३) श्री कलिवैरिदास स्वामीजी यह भी कहते हैं की वें अनन्य प्रयोजनर्गळ अर्थात् बिना लाभ अपेक्षा के एम्पेरुमान् (भगवान) के गुण गाते हैं।

४) श्री वरवरमुनि स्वामीजी उपदेश रत्नमाला में बताते हैं की इन्होंने अपने दिव्य तमिल पाशुरों से इस जगत को प्रकाशित किया।

५) पिळळै लोकम् जीयर् बताते हैं की श्रीवैष्णव संप्रदाय में मुदल आल्वारों को उसी प्रकार माना जाता है जिस प्रकार प्रणव (ॐकार) को आरंभ के रूप में माना जाता है।

६) श्री वरवरमुनि स्वामीजी बताते हैं की अश्विन मास की महत्ता और वैभव श्री सरोयोगि स्वामीजी के अवतार के कारण ही है।

७) पेरियावाच्चान पिल्लै के तिरुनेडुताण्डगम व्याख्यान के अवतारिका (भूमिका खंड) में बताया है कि मुदल आळवार, भगवान की परतत्वता/प्रभुत्वता पर अधिक केंद्रित थे। इसी कारण, प्रायः वे भगवान के त्रिविक्रम अवतार की स्तुति किया करते थे।

ग्रंथ रचना

श्री सरोयोगि स्वामीजी ने सौ गाथाओं से युक्त मुदल तिरुवन्दादि द्राविड प्रबंध की रचना की। श्री सरोयोगि स्वामीजी ने श्रीरंगम, श्रीवेंकटाद्रि, श्रीकांची, श्रीदेहली आदि दिव्यदेशों का वर्णन किया है।

विजय पर्व विजयदशमी

- श्री ज्योतीन्द्र के . अजवालिया
मोबाइल - ९८२५११३६३६

हमारी भारतीय संस्कृति में अनेक प्रकार के त्यौहार और उत्सव मनाने की परंपरा ऋषि काल से चली आ रही है। उत्सव मनाने के पीछे हमारी भारतीय संस्कृति कायम रखना, यही हमारा हेतु है। अनेक उत्सवों में दशहरा बहुत ही अनोखा उत्सव है दशहरा को विजयदशमी भी कहा जाता है। शारदीय नवरात्रि के बाद आने वाली दशमी (अश्विन शुक्ल पक्ष की दशमी) को हम विजयदशमी पर्व कहते हैं और मनाते भी हैं। विजयदशमी हिंदुओं का प्रमुख त्योहार है। दशहरा वर्ष की तीन अत्यंत शुभ तिथियों में से एक है अन्य दो शुभ तिथि में चैत्र शुक्ल एवं कार्तिक शुक्ल की प्रतिपदा का समावेश होता है।

विजयदशमी का विधि-विधान

विजयदशमी के दिन लोग शस्त्र पूजा करते हैं और नया कार्य का आरंभ भी करते हैं। जैसे अक्षर लेखन का आरंभ, नया उद्योग आरंभ, खेत में बीज बोना, नया मकान खरीदना, गुरु प्रवेश करना, नया वाहन खरीदना। ऐसा विश्वास है कि इस दिन जो कार्य आरंभ किया जाता है उसमें विजय अवश्य मिलती हैं। प्रचीन काल में राजा इस दिन विजय की प्रार्थना कर रणयात्रा के लिए प्रस्थान करते थे।

विजयदशमी के अवसर पर जगह-जगह पर मेले लगते हैं। रामलीला का आयोजन भी होता है, रावण का विशाल पुतला बनाकर उसे जलाया जाता है रावण के साथ पुत्र मेघनाद और भैया कुंभकरण का भी पुतला बनाकर उसे भी जलाया जाता है। इस तरह विजयदशमी भगवान राम की विजय का पर्व है, और साथ में दुर्गा पूजा के रूप में भी मनाया जाता है। आखिर में शक्ति पूजा का ही पर्व है, और शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष उल्लास और विजय का पर्व है। व्यक्ति और के रक्त में वीरता प्रकट हो और समाज के लोगों में जुस्सा प्रकट हो इसीलिए दशहरा का उत्सव मनाया जाता है। दशहरा का पर्व १० प्रकार के पापों का विनाश करता है... काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी के परित्याग की प्रेरणा प्रदान करता है।

विजयदशमी का महत्व

दशहरा का सांस्कृतिक पहलू भी है। भारत कृषि प्रधान देश है जब किसान अपने खेत में सुनहरी फसल उगाकर अनाज रूपी संपत्ति घर लाता है तो, उसके उल्लास और उमंग की सीमा नहीं रहती। इस प्रसन्नता के अवसर पर वह भगवान की कृपा मानता है और उसका धन्यवाद प्रकट करने के लिए वह उसका पूजन करता है।

समस्त भारतवर्ष में यह पर्व विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न प्रकार से मनाए जाने की परंपरा है

महाराष्ट्र में इस पर्व सिलंगण के नाम से प्रचलित है। सामाजिक महोत्सव के रूप में मनाए जाते हैं। सायं काल के समय सभी ग्रामवासी सुंदर सुंदर वस्त्र धारण करके गाँव की सीमा पर जाकर शमी वृक्ष के पत्तों के रूप में सुवर्ण लूट कर अपने घर अपने गाँव में वापस आते हैं फिर उस शमी पत्तों का परस्पर आदान-प्रदान करते हैं।

हिमाचल प्रदेश में ''कुल्लू'' का दशहरा बहुत ही प्रसिद्ध है। सब लोग सुंदर वस्त्रों से सुसज्जित होकर तुरही, झींगुल, ढोल, नगाड़े और बांसूरी आदि वाद्य को लेकर घर से बाहर निकल पड़ते हैं और दिल से बजाकर आनंद करते है। पहाड़ी लोग अपने ग्रामीण देवता की स्वारी (जुलूस) निकालकर पूजन करते हैं। देवता मूर्ति को पालकी में बिठाकर सजाया जाता है और उसके सामने नृत्य करते हैं। कुल्लू नगर में प्रभु रघुनाथ जी की वंदना होती है, इस तरह कुल्लू का दशहरा धूम-धाम से मनाया जाता है।

पंजाब में सभी लोग ९ दिन का उपवास करते हैं। इस दौरान यहाँ आगंतुकों का, मेहमानों का स्वागत पारंपरिक मिठाई और नवीन उपहारों से किया जाता है। यहाँ भी रावण दहन की परंपरा है।

बंगाल, उड़ीसा और असम में यह पर्व दुर्गा पूजा के रूप में मनाए जाते हैं बंगाल में ५ दिन का त्यौहार है और उड़ीसा, असम में ४ दिन का पर्व है बहुत बड़ा पंडाल में दुर्गा देवी की दिव्य मूर्ति को विराजमान करते हैं साथ में अन्य देवी देवता की मूर्ति भी स्थापित होती है। सप्तमी, अष्टमी और नवमी तिथि, सुबह और शाम विशेष पूजा होती है। अष्टमी के दिन बलि भी प्रदान की जाती है, दशमी के दिन विशेष महा पूजा का आयोजन होता है महाप्रसाद भी बांटे जाते हैं। पुरुष लोग आपस में गले मिलते है, आलिंगन करते है जिसे ''कोलाकुली'' कहते हैं। यहाँ स्त्रीयों, देवी का सिंदूर मस्तक पर लगाते हैं।

कर्नाटक मैसूर का दशहरा पूरे भारत में प्रसिद्ध है। मैसूर में हर गली हर मोहल्ले रोशनी से सजाए जाते हैं। हाथियों को सिंगार करके पूरे नगर में जुलूस निकाला जाता है। उस समय मैसूर महल को दुल्हन की तरह सजाया जाता है। संगीत और नृत्य के साथ भव्य शोभायात्रा निकलती है।

गुजरात में मिट्टी से बना हुआ घट का स्थापन ९ दिन तक घर में किया जाता है, माँ अंबा की स्थापना यह मिट्टी के घट रूप में होती है। हर रात हर गली में सब लोग पारंपरिक वस्त्र धारण करके गुजराती गरबा नृत्य करते हैं, और लोग घर में माँ जगदंबा की उपासना आराधना और अनुष्ठान करते हैं। इसी तरह जगदंबा को प्रसन्न करते हैं। दसवें दिन माँ जगदंबा को अपने स्थान वापस भेज कर विसर्जन करते हैं। इस दिन तरह-तरह की मिठाइयाँ खा कर और रावण दहन करके दिव्य पर्व मनाते हैं।

विजयदशमी की पौराणिक कथा

हम सब रामायण की कथा से माहितगार है। पिता दशरथ राजा की आज्ञा से प्रभु श्रीराम १४ साल वन में चल गये, प्रभु राम का साथ निभाने के लिए पत्नी सीता जी और भैया लक्ष्मण जी भी साथ में गये थे। इस वनवास के दौरान रावण ने सीता जी का हरण कर लिया और लंका में लेकर चले गए बाद में राम जी और लक्ष्मण जी ने वानर राज सुग्रीव और वानर हनुमान और वानर सेना की मदद से सीता जी का पता लगाया, और लंका में जाकर रावण के साथ महायुद्ध किया, युद्ध में प्रभु श्रीराम की विजय हुई। और प्रभु श्रीराम ने विभीषण को छोड़कर रावण परिवार का वध कर दिया। सृष्टि पर का असर राज का भी अंत भी कर दिया।

दूसरी कथा ऐसी है कि पृथ्वी पर असुर महिषासुर का बहुत प्रकोप था। धरातल के हर जीव त्राहिमाम थे, इस वक्त धर्म की रक्षा हेतु माँ दुर्गा ने नवरात्रि एवं दशहरा तक लगातार महायुद्ध किया और महिषासुर का अंत कर दिया। माँ दुर्गा ने महिषासुर पर विजय प्राप्त कर ली।

दोनों कथाओं में एक ही बात सामान्य है और वो है असत्य पर सत्य की विजय। इसीलिए दशहरा विजयदशमी के नाम से प्रचलित हुआ।

रावण को १० मस्तक थे राम ने दसो मस्तक को काट डाला यह भी दंतकथा भी है। इसीलिए दशहरा कहते हैं।

विजय पर्व विजयदशमी

विजयदशमी का उत्सव शक्ति और शक्ति का समन्वय ही बताने वाला उत्सव है। भारतीय संस्कृति सदासे ही वीरता एवं शौर्य की समर्थक रही है। यदि कभी युद्ध अनिवार्य ही हो तब शत्रु के आक्रमण की प्रतीक्षा न कर उस पर हमला कर उसका पराजित करना ही राजनीति है। भगवान राम ने रावण से युद्ध हेतु इसी दिन प्रस्थान किया था। मराठा रत्न शिवाजी ने भी औरंगजेब के विरुद्ध इसी दिन प्रस्थान करके हिंदू धर्म का आरक्षण किया था। भारतीय इतिहास में अनेक उदाहरण हैं की हिंदू राजा इस दिन विजय प्रस्थान करते थे।

इस पर्व को भगवती के ''विजया'' नाम पर भी विजयदशमी किया जाता हैं। ऐसा माना जाता है कि अश्विन शुक्ल दशमी को तारा उदय होने के समय विजय नामक मुहूर्त होता है यह काल सर्वकार्य सिद्धिदायक होता है, इस

दिन श्रवणा नक्षत्र का योग और भी अधिक शुभ माना गया है।

पांडव काल की बात है कि अर्जुन ने अज्ञातवास में अपना धनुष, बाण एक शमी वृक्ष के ऊपर रख दिया था तथा स्वयं ''बृहन्नला'' वेष धारण करके राजा विराट के यहाँ नौकरी कर ली थी। जब गौ रक्षा के लिए ध्रुष्टधुम्न ने अर्जुन को साथ में लिया तब अर्जुन ने शमी वृक्ष पर से अपना धनुष को उठाकर शत्रु पर विजय प्राप्त की। विजयदशमी के दिन राम जी ने लंका की ओर प्रस्थान किया तब शमी वृक्ष ने भगवान की विजय का उद्घोष किया था, तब से यह दिन विजय काल में शमी वृक्ष का पूजन होता है। तो आइए हम सब अपने देश के लिए हमारे परिवार के लिए राज्य सदा विजय बनी रहे इसीलिए भगवान राम का अनुसंधान करके विजय पर्व धाम तुमसे मनाये।

जय श्रीराम! जय माते!!

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले महोदय निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में मुद्रित नहीं है।'

५. रचनाओं को मुद्रित करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ जोड करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं का भेजनेवाला पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस कांपौन्ड, के.टी.रोड,
तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल

श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का नवरात्रि ब्रह्मोत्सव

२०२० अक्तूबर १६ से २४ तक

१७-१०-२०२०
शनिवार

दिन :
लघुशेषवाहन

रात :
हंसवाहन

१८-१०-२०२०
रविवार

दिन :
सिंहवाहन

रात :
मोतीवितानवाहन

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल

श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का नवरात्रि ब्रह्मोत्सव

२०२० अक्तूबर १६ से २४ तक

१९-१०-२०२०
सोमवार

दिन :
कल्पवृक्षवाहन

रात :
सर्वभूपालवाहन

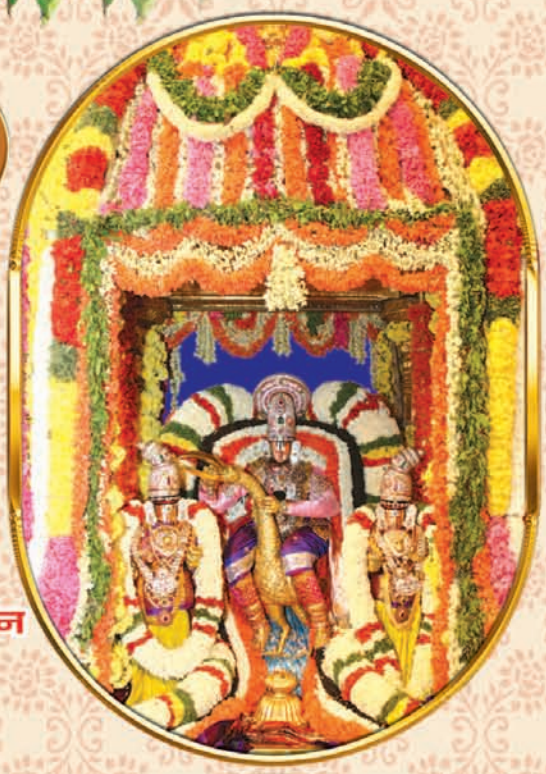

२०-१०-२०२०
मंगलवार

दिन :
पालकी में
मोहिनी अवतारोत्सव

रात :
गरुडवाहन

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल

श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का नवरात्रि ब्रह्मोत्सव

२०२० अक्तूबर १६ से २४ तक

२१-१०-२०२०
बुधवार

दिन :
हनुमन्तवाहन

रात :
गजवाहन

२२-१०-२०२०
गुरुवार

दिन :
सूर्यप्रभावाहन

रात :
चंद्रप्रभावाहन

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल

श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का नवरात्रि ब्रह्मोत्सव

२०२० अक्तूबर १६ से २४ तक

२४-१०-२०२० शनिवार
दिन - चक्रस्नान

२३-१०-२०२० शुक्रवार
रात - अश्ववाहन

तिरुमल में श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस., से
दि. ०४.१०.२०२० को कार्यभार स्वीकारते हुए
ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी
पूर्ण अतिरिक्त प्रभार
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.

श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस., से
दि. १०.१०.२०२० को तिरुमल में
ति.ति.दे. नूतन कार्यनिर्वहणाधिकारी के
पद का कार्यभार स्वीकारते हुए
डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.

भूतत आल्वार

(श्री भूतयोगी स्वामीजी)

- श्रीमती नीता गोकुलजी दरक
मोबाइल - ९८४४३३५८५८

तिरुनक्षत्र : तुला मास, धनिष्ठा नक्षत्र

अवतार स्थल : श्रीमल्लीपुर

आचार्य : सेनै मुदलियार (श्री विष्वक्सेन)

ग्रंथ रचना : इरंडान् तिरुवन्दादि

जब से श्री भगवान का कृपा कटाक्ष हुवा तब से श्री सरोयोगि स्वामीजी, श्री भूतयोगी स्वामीजी और श्री महाद्योगी स्वामीजी ये तीनों सूरी एक साथ ही रहा करते थे। प्राचीन काल से ही इनकी प्रसिद्धि 'मुदल आल्वार' यानि 'आद्य सुरीगण' ऐसी है।

आल्वारों की सूची में श्री भूतयोगी स्वामीजी द्वितीय आल्वार है। श्री सरोयोगी स्वामीजी के अवतार के दूसरे दिन तुंडीर मण्डल में पूर्व समुद्र के तीर में विरजमान श्रीमल्लीपुर के पुष्प वाटिका के माधवी लता के सर्वोत्तम पुष्प से महातेजस्वी श्री भूतयोगी स्वामीजी का लोकहित के लिए प्रादुर्भाव हुवा। इन्हे भूतःवयर और मल्लपुरवराधीशर के नामों से भी जाना जाता हैं।

मल्लीपुरवराधींश माधवी कुसुमोद्भवम्।
भूतं नमामियो विष्णोज्ञनिदौपमकल्पयत्।।

श्रेष्ठ मल्लीपुर को स्वामी और माधवी कुसुम से प्रगटीत श्री भूतयोगी को मैं प्रणाम करता हूँ, जिन्होंने अश्विन मास के धनिष्ठा नक्षत्र में समुद्र तट पर मल्लीपुर नामक क्षेत्र में मालती पुष्प से अवतार लिया और भगवान श्रीमन्नारायण के ज्ञान दीप को जलाकर उनके अनन्य कृपा पात्र बने। ऐसे परम भक्त **श्री भूतयोगी स्वामीजी जो भगवान कि गदा के अवतार थे,** उनको समस्त लोक प्रणाम करते हैं।

एक बार भ्रमण करते हुवे श्री भूतयोगी स्वामीजी ने श्री सरोयोगी स्वामीजी से स्थान की याचना की और संकुचित जगह में दोनों बैठ गए। थोड़ी ही देर में भ्रांतयोगी स्वामीजी वहाँ पधारे फिर तीनों योगी खड़े रहकर भगवद चिन्तन तथा गुणानुवाद करते हुए रात्रि व्यतित करने लगे। **''एक श्रीवैष्णव दूसरे श्रीवैष्णव को देखकर दण्डवत प्रणाम करें।''** इस प्रकार परस्पर में प्रणाम कर सानन्द अनुभव को प्राप्त किये। इसी मौके को देखकर श्री त्रिविक्रम भगवान इन तीनों में अत्यद्भुत अनुग्रह को प्रकाशित करने के लिये गाढ अंधकार और घनघोर वर्षा को उत्पन्न कर खुद बड़ा भारी श्रीविग्रह लेकर इन तीनों के बीच में उपस्थित हो गर्दी उत्पन्न किये। हमारे बीच यह चौथा कौन हैं देखने के लिये श्री भूतयोगी स्वामीजी ने अपने प्रेम का दीप बनाके, अपने लगाव का तेल

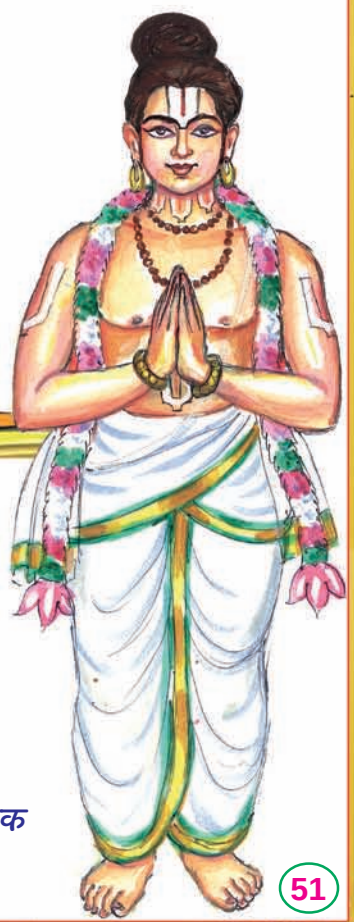

और ज्ञान का प्रकाश लेकर उज्वल किया। और उसके दिव्य प्रकाश में भगवान श्रीमन्नारायण को देखा। भगवद दर्शन कर श्री भूतयोगी स्वामीजी ने अपना भगवद अनुभव लोकहितार्थ प्रगट करने लिये १०० गाथाओं से युक्त **''इरंडान् तिरुवन्दादि''** इस द्राविड दिव्यप्रबन्ध की रचना की। उस समय से वे तीनों आल्वार तिरुक्कोवलूर आयन और अन्य अर्चावतार भगवान के स्वरूपों का साथ-साथ अनुभव करते हुए इस लीला विभूति में अपना जीवन बिताये। उन्होंने साथ मिलकर और भी कई दिव्यदेशों/क्षेत्रों के दर्शन किये। इन्हें ''ओडि तिरियुम योगीगळ'' अर्थात् निरन्तर तीर्थ यात्रा में रहने वाले योगि भी कहा जाता हैं।

श्री भूतयोगी स्वामीजी का वैभव

१) भूतत यानि 'सत्ता को प्राप्त हुये'। श्री भगवान के स्वरूप गुण विभूति इत्यादि विशेषों का पूर्ण अनुभव होने के कारण वो सत्ता को प्राप्त हो गए थे।

२) इनका अवतार पुष्प गर्भ से हुआ है इसीलिए ये आयोनिज (जो माता कि गोद से नहीं पैदा होता) माने गये है।

३) द्वापरयुग के समाप्ति में और कलियुग के शुरुआत में इनका अवतार हुआ।

४) श्री विष्वक्सेन जी श्री भूतयोगी स्वामीजी के आचार्य हुये।

५) वें बचपन से अन्न-पानादि से रहित और कैंकर्य के सुरस को पीने को सदा तत्पर रहकर, शब्दादि विषयों से सदैव अपरिचित रहे।

६) इन्हें जन्म से ही भगवान के प्रति अत्यंत प्रीति थी। भगवान का परिपूर्ण अनुग्रह उन्हें प्राप्त था और उन्होंने जीवन पर्यंत भगवत अनुभव का आनन्द प्राप्त किया।

७) वे सदा परमात्मा के दास रूपी मुख्य रसिक, भगवत भक्ति तथा ज्ञान वैराग्य से सदा सम्पन्न थे।

८) अपना भगवत अनुभव लोकहितार्थ प्रगट करने के लिए उन्होंने सौ गाथाओं से युक्त 'इरंडान् तिरुवंदादी' नामक ग्रंथ की रचना की।

९) अपने ग्रंथ में पृथ्वी पर विराजित भगवान श्रीविष्णु १०८ दिव्यदेशों में से श्री भूतयोगी स्वामीजी ने श्रीरंगम, श्रीकांची, श्रीदेहली और श्रीमल्लीपुरम क्षेत्र का वर्णन किया है।

१०) श्री भूतयोगी स्वामीजी ने लगभग १५ दिव्यदेशों में जाकर मंगलाशासन किया।

आचार्य आल्वारों द्वारा श्री भूतयोगी स्वामीजी का वैभव प्रकाशन

१) श्री शठकोप स्वामीजी कहते हैं, ''भगवान की महानता/प्रभुत्वता को प्रथम बार सुमधुर तमिल भाषा में इन्होंने ही प्रकाशित किया हैं।''

२) श्री कलिवैरिदास स्वामीजी, इन्हें, **''सेन्तमिळ पाडुवार''** - मधुर तमिल भाषा में गाने वाले और **''इन्कवि पाडुम परमकविगळ''** - तमिल भाषा के महान पंडित कहकर संबोधित करते हैं।

३) श्री वरवरमुनि स्वामीजी उपदेश रत्नमाला में बताते हैं की इन्होंने अपने दिव्य तमिल पाशुरों से इस जगत को प्रकाशित किया।

४) पिळ्ळै लोकम् जीयर् बताते हैं की श्रीवैष्णव संप्रदाय में मुदल आल्वारों को उसी प्रकार माना जाता है जिस प्रकार **प्रणव (ॐकार)** को आरंभ के रूप में माना जाता है।

५) श्री वरवरमुनि स्वामीजी बताते हैं की तुला मास की महत्ता और वैभव श्री भूतयोगी स्वामीजी के अवतार के कारण ही है।

६) पेरियावाच्चान पिल्लै के तिरुनेडुताण्डगम व्याख्यान के अवतारिका (भूमिका खंड) में बताया है कि मुदल आळवार, भगवान की परतत्वता/प्रभुत्वता पर अधिक केन्द्रित थे। इसी कारण, प्रायः वे भगवान के त्रिविक्रम अवतार की स्तुति किया करते थे।

श्री वेंकटेश सुप्रभात

स्तोत्र रचना - श्री प्रतिवादि भयंकर अण्णा स्वामीजी

व्याख्या - श्री यू.वी.पी.बी.श्रीनिवासाचार्यजी

मोबाइल - ९३६४३२४८४४

***मा**तस्समस्तजगतां मधुकैटभारेः*
वक्षोविहारिणि मनोहरदिव्यमूर्ते।
श्रीस्वामिनि श्रितजनप्रियदानशीले
श्रीवेंकटेशदयिते तव सुप्रभातम् ॥३॥

पदार्थ -

समस्तजगतां - सारे जगत की,

मातः - हे माता,

मधुकैटभारेः - मधु तथा कैटभ नामक दोनों असुरों को संहर्ता विष्णु के,

वक्षः विहारिणी - वक्षःस्थल में क्रीडा करने वाली,

मनोहर दिव्यमूर्ते - सुन्दर उन्नत दिव्य-शरीरवाली,

श्री स्वामिनि - (हमारे) स्वामिनि,

श्रितजन प्रियदानशीले - शरणागतजनों को वांचितार्थों का प्रदान करने की स्वभाव वाली,

श्री वेंकटेशदयिते - श्री वेंकटेशजी की प्रिये,

तव - तुमको,

सुप्रभात - यह सुप्रभात हो।

भावार्थ - सबकी माता भगवान के वक्षःस्थल में सुन्दर दिव्य शरीर के साथ रह कर आश्रितों को वांचित फलों को देने के स्वभाववाली हमारे स्वामिनि श्री वेंकटेशजी की देवी आपके प्रियतम भगवान को जगाने के लिए आप पहले जाग उठिये।

विशेषार्थ - इस श्लोक से ही सुप्रभात स्तोत्र प्रारम्भ होता है। समस्त जगतां मातः ''त्वं माता सर्वलोकानां देवदेवो हरिः पिता'' (वि.पु.१-९-१९६) सब लोकों की आप माता हैं, देवों के नायक हरि पिताजी हैं इस इन्द्रकृत लक्ष्मी स्तुति और अन्य स्तुति प्रमाण है।

मधुकैटभारेः - वक्षोविहारिणि - भगवान अनिरुद्ध रूप धारण कर मधु कैटभों को जीते यह पूर्वजों का वचन है। ''दिव्यमाल्याम्बरधरा स्नाता भूषण भूषिता। पश्यतां सर्वदेवानां ययौ वक्षःस्थलं हरेः।। (वि.पु.१-९-१०५)'' क्षीरसागर में आविर्भूत श्रीदेवी स्नानकर दिव्य वस्त्र तथा दिव्य माला को धारण कर सभी आभूषणों से अलंकृत होकर देवताओं के देखते रहते हरि के वक्षःस्थल को प्राप्त की उस उक्ति के अनुसार मधुकैटभारेः वक्षो विहारिणि कहा गया है। विहार करना = श्रम दूर होकर आनंदपूर्वक रहना।

मनोहरदिव्यमूर्ते - भगवान के मन को लुभाने वाले सुन्दर उन्नत दिव्य शरीर वाली।

''मुर्छा मोह समुच्छ्रायोः'' इस धातु से उत्पन्न 'मूर्ति' शब्द मुग्ध करने वाले दीर्घ शरीर का सूचक है। दिव्य-अप्राकृत-अर्थात् प्रकृतिमंडल के पंचभूतों का न होकर परमपद के पंचभूतों से बना लक्ष्मीजी का शरीर है।

श्री स्वामिनि - भगवान श्री स्वामी हैं - मालिक हैं लक्ष्मीजी श्री स्वामिनी हैं, मालकिन हैं।

श्रितजनप्रियदानशीले - प्रिय शब्द का इष्ट तथा पति ये दो अर्थ हैं। ''अभीष्टे; अभीप्सितं, हृदयं, दयितं, वल्लभं प्रियं'' यह अमरकोश है। अपने को, आश्रितजनों को अभीष्ट फलों को देना इनका स्वाभाविक है एवं आश्रितों को अपने पति को देना इनका स्वाभाविक है। ये दो अभिप्राय है। श्री गोदाम्बाजी के तिरुप्पावै दिव्यप्रबंध के बीसवाँ पाशुर के अंतिम चरणों को आचार्यों के किये अर्थ, द्वितीय अभिप्राय का मूल है।

श्री वेंकटेश दयिते - पापों को नष्ट करने का स्वभाव होने से श्री वेंकटाद्रि तथा श्रीनिवास भगवान दोनों को 'वेंकट' शब्द वाचक है। अतः इस शब्द का यह अर्थ निकला है कि श्री वेंकटाद्रि के ईश्वर अथवा श्रीवेंकट नामक ईश्वर, उनकी प्रिये।

सुप्रभातम् - रात बीत कर प्रभात (भोर) होने का समय। सुप्रभात-अच्छा प्रभात अर्थात् मङ्गलकर प्रभात ॥३॥

तव सुप्रभातमरविन्दलोचने
भवतु प्रसन्नमुखचन्द्रमण्डले
विधिशंकरेन्द्रवनिताभिरर्चिते
वृषशैलनाथदयिते दयानिधे ॥४॥

पदार्थ -

अरविन्दलोचने - कमल के फूल के जैसे नयनवाली,

प्रसन्नमुखचन्द्रमंडले - चन्द्रमंडल के समान तथा स्वच्छ श्रीमुख वाली,

विधिशंकरेन्द्रवनिताभिः - ब्रह्म, शिव तथा इन्द्र की पत्नियाँ सरस्वती, पार्वती, शचि देवियों से,

अर्चिते - पूजिते,

दयानिधे - दया का जन्म स्थान

वृषशैलनाथ दयिते - वृषाद्रि के नाथ की प्रिये,

तव - आपको,

सुप्रभातं भवतुज - (यह) सुप्रभात हो।

भावार्थ - कमलनयन तथा चंद्र के जैसे मुख से श्री वेंकटनाथ को आह्लादित कर, सरस्वती आदि देवपत्नियों से पूजित हमारे प्रति पूर्ण दया रखने वाली महालक्ष्मी आपको यह सुप्रभात हो।

विशेषार्थ - अरविन्दलोचने - स्वभाव से ही सुन्दर माताजी की आँखे बच्चों को देखने से हुए आनन्द से कमल फूल जैसा खिलकर लाल होती हैं।

प्रसन्नमुखचन्द्रमण्डले - चन्द्र मण्डल मात्र अह्लादकरत्व में उपमान है।

विधिशंकरेन्द्रवनिताभिः अर्चिते - 'दासीभूतसमस्तदेववनितां' (लक्ष्म्यष्टोत्तर) समस्त देव पत्नियों को अपनी दासी रखने वाली का वन्दन करता हूँ - इस प्रमाण वचन को देखें। ''ब्रह्मेशादि सुरव्रजस्सदयितस्त्वद्दासदासीगणः'' (चतुश्लोकी-१) ब्रह्म, शिव आदि देवता समूह अपनी-अपनी पत्नी सहित आपके सेवक तथा सेविकायें हैं। श्री यामुनाचार्य की इस श्रीसूक्ति को स्मरण करना है।

वृषशैलनाथदयिते-दयिता-चित्तं आदत्ते - मन को चुरा देती है इस अर्थ वाला दयिता शब्द सुन्दर पत्नी को बताता है।

दयानिधे - दया के खान। इनके पुरुषकार से ही भगवान का स्वातन्त्र्य दब जाकर दया के उत्थित होने से उनकी भी दया (कार्यकर) होती है। इस कारण से इनको दया का खान कहने में कोई बाधा नहीं ।।४।।

अत्र्यादिसप्तऋषयस्समुपास्य सन्ध्यां
आकाशसिन्धुकमलानि मनोहराणि।
आदाय पादयुगमर्चयितुं प्रपन्नाः
शेषाद्रि शेखरविभो तव सुप्रभातम् ।।५।।

पदार्थ -

अत्रि आदि सप्तऋषयः - अत्रि आदि सात महर्षि

संन्ध्यां समुपास्य - संध्यावंदन कर,

मनोहराणि - चित्त को चुराने वाले,

आकाश सिन्धुकमलानि - आकाशगंगा के कमल पुष्पों को,

आदाय - (तोड़कर) लेकर,

पादयुग - (तुम्हारे) चरण द्वन्द्वों को,

अर्चयितुं - अर्चना करने,

प्रपन्नाः - प्राप्त हुए हैं (उपस्थित हुए हैं)

शेषाद्रिशेखरविभा - आदिशेष पर्वत के शिरो भूषणभूत हे नाथ,

तव सुप्रभातं - तुझे (यह) सुप्रभात हो।

भावार्थ - श्रीवेंकटाद्रीश! अत्रि आदि मुनि लोग प्रातः कृत्य को समाप्त कर तुम्हारी सेवा के लिए आकाशगंगा से कमल फूलों को उतार कर आकर प्रतीक्षा कर रहे हैं। तुम दिव्य नेत्रों को खोलो।

विशेषार्थ - मरीचि, अत्रि, अंगिरस, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ ये सप्तर्षि हैं। ऐसा कुछ लोग बोलते हैं। वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र, भरद्वाज ये सात हैं। यह विष्णुपुराण (३१-१-३२) बताता है।

संध्या शब्द तीनों संध्याओं का, तत्तत्संध्या में जप्य गायत्री, श्रीमदष्टाक्षर आदिमंत्रों का उन मंत्रों के प्रतिपाद्य भगवान का नाम है एवं च संध्यां समुपास्य का, प्रातःकाल में जप्य मंत्रों को जप कर तदन्तर्गत आप का ध्यान कर, अर्थ होता है।

कमलानि आदाय पादयुगं अर्चयितुं - पुष्पों को उतारना, अर्चना करना दोनों का कर्ता मुनिलोग है। ऐसा प्राप्त होने से इन मुनिवरों को अर्चकों के द्वारा नहीं स्वयं भगवान के चरणों में, अद्वारक, अर्चना करने का अधिकार है, यह प्रतीत होता है।

शेषाद्रिशेखरविभो - शेषाद्रि-आदिशेषपर्वत, शेखर-शिरोभूषण। 'विभुः-प्रभौ सर्वगते' इस मेदिनी कोश के आधार पर सामर्थ्यवान, सर्वत्र व्याप्त ये दोनों अर्थ भगवान में घटित होता है ।।५।।

क्रमशः

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(षष्टम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि. तापडिया
मोबाइल - ९४४९५१७८७९

१०१

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्री देवराज गुरु कहते हैं की हे महात्माओं! पूर्वोक्त इस साधन स्वरूप भक्तियोग में इतने शर्त और अड़ंगे हैं की काल, कर्म, गुण, स्वभाव के परवश रहने वाले जीव से करोड़ों जन्म में भी पालन होना अति अशक्य है। मन इन्द्रिय वश हो तो कर्मयोग की सिद्धि हो, कर्मयोग सिद्ध हो जावे उसको ज्ञानयोग की प्राप्ति होती है। जिसको पूर्ण ज्ञानयोग मिल चुका, साधन भक्तियोग में जाने का वही अधिकारी होता है। अंत में प्राण निकलते समय भगवत् ध्यान पूर्वक भगवान का नाम उच्चारण करता हुआ मरे, उसको जानिए कि साधन भक्तियोग की सिद्धि मिली। इस साधन स्वरूप भक्तियोग करने वालों के लिये आदि में मन, इन्द्रिय वश करने की शत, अन्त में भगवान का ध्यान करके मरने की शर्त, परवश जीव के लिए कितनी कठिन बात है। कह लेना तथा सुन लेना तो सहज है परन्तु करना तो महा मुश्किल है। पहिले पूर्व भाग शरणागति मीमांसा में इस साधन स्वरूप भक्तियोग निर्णय प्रसंग में इसका भली भाँति निर्णय कर चुके हैं। अपने को अत्यन्त परतन्त्र समझने वाले मुमुक्षु लोग इस साधन स्वरूप भक्तियोग से लाखों कोस दूर भागते हैं। जिसकी इसी जन्म के अन्त में संसार बन्धन से छूटकर परमपद में जाने की उत्कट इच्छा है उसके लिए इस साधन स्वरूप भक्तियोग से कुछ भी फायदा नहीं निकल सकता है, यहाँ तक संक्षेप में साधन स्वरूप भक्तियोग का स्वरूप तथा उसकी कठिनता वर्णन किया हूँ और भी इसके सम्बन्ध में कुछ कह के फिर सबके लायक बिना परिश्रम इसी जन्म के अन्त में अवश्य परमपद पहुँचा देने वाला सीधा उपाय जो शरणागति योग है उसका वर्णन करूँगा।

हम भजन करेंगे तो तरेंगे। भजन किये बिना संसार से नहीं तर सकते। कलि में केवल नाम ही आधार है। जो नाम का सहारा लेगा वह जरूर संसार से पार होगा। मुक्ति मिलने के लिए कलि में भगवान का कीर्तन ही प्रधान है। भगवान के धाम में किसी प्रकार भी पड़े रहने से मुक्ति हो जावेगी नाम लेने से भवसागर सूख जावेगा। जैसे :-

''नाम लेत भवसिन्धुसुखा हीं''

भवसागर से जो पार जाना चाहे, श्रीराम कथा उसके लिए दृढ़ नौका है। जैसे कि :-

''भवसागर चह पार जो पावा।
राम कथा ताकहँ दृढ़ नावा।।''

जो भगवन्नाम लेकर जम्हाई लेता है उसके अनेक पाप नष्ट होते हैं। भगवान का नाम संसार समुद्र तरने के लिए जहाज है। अन्त में मरते समय श्री भगवान के श्री नामों को अवश्य उच्चारण करके ही मरना चाहिए। उससे अवश्य मुक्ति मिलेगी। जो पुण्य तिथि में मरता है, उसकी अच्छी गति होती है। इत्यादि जितनी बातें हैं ये सब पूर्वोक्त साधन स्वरूप भक्तियोग से सम्बन्ध रखने वाली हैं। इस सबों में भी वही शर्त लागू है। इन पूर्वोक्त सभी प्रसंगों में सब से पहिले मन और इन्द्रियों का वश कर लेने की सख्त जरूरत है। इन साधनों को करने वाले अधिकारियों की मुक्ति तभी होगी जब कि श्री भगवान के श्री नामों का उच्चारण करते हुए एकाग्र मन से शरीर छोड़ पायेंगे। ऐसा नहीं हुआ तो महात्मा जड़-भरत जी के समान जन्मते-मरते रहेंगे, चाहे कितना भी

कोई साधन भक्तियोग को क्यों न करें। परन्तु जब तक उसका मन इन्द्रिय वश नहीं होगा तब तक वह सिद्ध नहीं होगा। जब सिद्ध नहीं होगा फिर मुक्ति रूप फल किस तरह मिल सकेगा। क्रम बिगड़ने से अन्तिम स्मृति भी नहीं हो सकेगी। और अजामिल का 'हे नारायण' कहके तरने वाला म्लेच्छ का प्रसंग है, ललिता आदि के जो चरित्र हैं यह साधन भक्तियोग के अन्तर्गत नहीं हैं। किन्तु श्री भगवान के द्वारा अति स्वतन्त्रपने से ग्रहण किया हुआ जो सीमा से बाहर निर्हेतुक कृपा-रूप दिव्य गुण है उससे स्वीकार किया गया, याने माना हुआ जो अज्ञात सुकृत है उसको निमित्त करके परमात्मा ने उन लोगों को मुक्ति प्रदान की। उनकी स्वीकृति में कुछ क्रम नहीं है, न उनका उसमें कुछ साधन है, न साधन कर्तृत्वाभिमान है। किन्तु अपार करुणा सागर परमात्मा की निर्हेतुक कृपा से ही मान लिया गया अज्ञात सुकृत का व्याज मात्र है। जहाँ इस चेतन की तरफ से स्वतंत्रता पूर्वक कर्म, ज्ञान, भक्ति करके शुद्ध होकर तरने का प्रसंग है वहाँ ही अनेक शर्त का प्रसंग है। इसकी जितनी शर्ते हैं वे एक से एक बड़ी कठिन हैं इसी जन्म के अन्त में संसार बन्धन से छूटकर जो परमपद जाने की इच्छा करने वाले मुमुक्षु हैं इस साधन स्वरूप भक्तियोग के द्वारा तो उनका मनोरथ सिद्ध होना बहुत मुश्किल है क्योंकि इसके ऊपर परिस्थिति करके रहने वाले अधिकारी के प्रति खुद श्री भगवान का श्रीमुख वचन है।

''अनेक जन्म संसिद्धस्ततो यान्ति परांगतिम्।''

याने अनेक जन्मों में जब उसका साधन सिद्ध होगा तब वह परमगति को जावेगा। जब उसकी गति के बाबत खुद श्री भगवान ही समय का निश्चय नहीं कर रहे हैं तो अनेक जन्मों का क्या ठिकाना। इसका भली भाँति स्वरूप जो महात्मा समझ जाते हैं वे उसी वक्त उसका भरोसा छोड़कर भगवान की कृपा का सहारा पकड़ते हैं। जैसे महात्मा श्री तुलसीदास जी कहते हैं की :-

''ज्ञान भक्ति साधन अनेक सब सत्य झूठ कछु नाहीं।
तुलसिदास हरि कृपा मिटै भ्रम यह भरोस मन माहीं।।''

कर्म, ज्ञान, भक्तियोग आदि जो अनेक साधन हैं वे सब सत्य ही हैं झूठ नहीं। परन्तु हम को तो संसार बन्धन से छूट कर जल्दी से जल्दी परमपद में जाने के लिए एक श्रीहरिजी की कृपा का ही भरोसा है। इस प्रकार कहने का तात्पर्य यही है कि साधन स्वरूप जो कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग आदि साधन हैं उनके भरोसे कब मोक्ष होगी, इसका कुछ ठिकाना ही नहीं हैं। क्योंकि उसके अनेक शर्तों के पालन करने में हरेक प्रकार से परवश यह चेतन महा असमर्थ है और भगवान की निर्हेतुक कृपा के भरोसे पर संसार बन्धन से छूट कर इसी जन्म के अन्त में परमपद चले जाना अत्यन्त सहज है इसी से अशक्य, परतन्त्र, स्वरूप से विरुद्ध उस कठिन उपायों का अवलम्ब छोड़कर बड़े-बड़े समझदार महात्मा लोग परतन्त्र स्वरूप के अनुरूप सबके लायक सरल से सरल अचूक उपाय जो श्रीहरि की कृपा है उसीके, सहारे को पकड़ते हैं। जब साधन स्वरूप भक्तियोग की कठिनता की तरफ ध्यान गया तो झट महात्मा तुलसीदास जी श्री रघुनाथ जी से यही प्रार्थना किये कि :-

''मेरे न बने बनाये राम कोटि कलपलों,
राम रावरे बनाये बने पल पाव में।''

याने हे श्री रघुनाथ जी! मैं अपने बल से तो करोड़ों कल्प में भी अपना उद्धार नहीं कर पाऊँगा। और आपकी निर्हेतुक कृपा के बल से तो पाव पल में ही उद्धार हो सकता है।

इसी प्रकार और भी बड़े-बड़े आचार्यों का साधन स्वरूप भक्तियोग की कठिनता की तरफ ध्यान गया तो वे भी यही कहे कि :-

''कलौ भक्त्यादिका मार्गा दुःसाध्या इति मे मतिः।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन शरणं भावयेद्धरिम्।।''

याने साधन स्वरूप कर्म, ज्ञान, भक्तियोग के जो मार्ग हैं इस कलि में वे बड़े ही दुःसाध्य हैं। इससे उस साधनों का भरोसा छोड़ कर इसी जन्म के अन्त में संसार बन्धन से छूटने की चाहना करने वाले अधिकारियों को चाहिए कि श्री भगवान के शरणागत होकर रहें।

क्रमशः

भक्त प्रह्लाद की महिमा

तेलुगु मूल - डॉ.वैष्णवाँघ्रि सेवक दास
हिन्दी अनुवाद - श्री अमोघ गौराँग दास
मोबाइल - ९८२१९१४६४२

भक्त प्रह्लाद की अचिन्त्य शक्ति से घबराएँ हुए हिरण्यकशिपु का अध्यापकों के सांत्वनापूर्ण शब्दों से ढ़ाढ़स बंध गया। अध्यापकों ने कुछ समय में बालक में महत्वपूर्ण परिवर्तन होने का आश्वासन दिया। हिरण्यकशिपु ने अध्यापकों को उसे केवल राज घराने से सम्बंधित शिक्षा देने का सुझाव दिया। तब प्रह्लाद को पुनः गुरुकुल में लाकर आर्थिक विकास, इंद्रिय सुख पाने एवं कुछ धार्मिक सिद्धांतों की शिक्षा दी गई। अध्यापकों ने मोक्ष के विषय में कुछ नहीं बताया। उन्होंने प्रह्लाद के स्वभाव को बदलने का बहुत प्रयत्न किया किन्तु उनकी सभी चालें असफल रहीं और उनका बालक पर कोई प्रभाव न पड़ा।

एक बार अध्यापक के किसी व्यक्तिगत कार्य से कहीं चले जाने पर प्रह्लाद ने अपने सहपाठी असुर मित्रों को एकत्रित करके उन्हें भक्ति के अमृत का उपदेश देना प्रारम्भ कर दिया। प्रह्लाद ने उनसे कहा ''प्रिय मित्रों! एक बुद्धिमान व्यक्ति पाँच वर्ष की सुकुमार अवस्था से ही भागवत धर्म सीखना प्रारम्भ कर देता है। मनुष्य जीवन अत्यंत दुर्लभ एवं थोड़े समय का होने पर भी भक्ति करने में बहुत सहायक है। इंद्रिय सुख सभी जीवनों में प्राप्त हो सकता है अतः एक व्यक्ति को अपने मूल्यवान मानव जन्म का उपयोग केवल इन्द्रिय भोग के लिए नहीं करना चाहिए। तुम यह समझने का प्रयत्न करो कि इन्द्रिय सुख तो उसी प्रकार स्वतः ही प्राप्त हो जाता है जैसे कष्टों का ढ़ेर बिना माँगे ही सिर पर आ गिरता है। सामान्यतः आधा जीवन निद्रा में ही व्यतीत हो जाता है। अतः सौ वर्ष तक जीने वाले एक व्यक्ति का वास्तविक जीवन काल पचास वर्ष ही है। उन चन्द वर्षों में से प्रारंभ के दस वर्ष बचपन के खेलों में ही व्यतीत हो जाते हैं। फिर अन्त के बीस वर्ष अधिक उपयोगी न होकर वृद्धावस्था में चले जाते हैं। शेष जीवनकाल अतृप्त एवं असंयमित इच्छाओं को पूर्ण करने में व्यर्थ ही चला जाता है। इन्द्रिय भोग पर संयम न लगा पाने वाला व्यक्ति स्वयं को बन्धन की जकड़ से मुक्त नहीं कर सकता है। ''प्रिय मित्रों! भक्तिहीन व्यक्ति सदैव पूर्णतया भौतिकवादी होते हैं। एसे लोग ही असुर कहलाते हैं। यद्यपि तुम एसे ही लोगों की संतान हो लेकिन तुम आसुरी लोगों से दूर रहकर भगवान नारायण की शरण लो। भगवान विष्णु की शरण ही शांति पाने

का सर्वोच्च स्थल है। नारद मुनि जैसे संत व्यक्तियों की संगति के बिना यह ज्ञान हमारे हृदय में प्रकट नहीं होता है। आकस्मिक यह ज्ञान मुझे नारद मुनि से प्राप्त हुआ है।''

प्रह्लाद के वाक्यों को सुनकर उनके मित्र उत्साहित हो गये लेकिन उन्हें सन्देह हुआ कि एसा कैसे संभव हो सकता है। उन्होंने खुलकर कहा ''प्रह्लाद! तुम और हम सभी केवल अपने दो अध्यापकों को जानते हैं। हम बच्चे हैं। हम अपने कठोर अध्यापकों के नियंत्रण में रहते है। और नारद मुनि जैसे संतों का संग पाना अत्यंत दुर्लभ है। तब एसी परिस्थितियों में तुमने नारद मुनि से यह अव्यय ज्ञान कैसे प्राप्त किया। कृपया हमारा संदेह दूर करिये।''

प्रह्लाद ने नारद मुनि का संग दिलाने वाली संपूर्ण कथा सुनाने का निश्चय किया। सभी असुर बालक प्रह्लाद की कहानी सुनने के लिए उत्साह से भर गये। तब प्रह्लाद ने कथा प्रारंभ की। ''मेरे पिता के मंदर पर्वत पर कठोर तपस्या के लिए चले जाने पर इन्द्र एवं अन्य देवताओं ने असुरों पर आक्रमण कर दिया। देवताओं की शक्ति से सभी असुर भाग गये। तब देवताओं ने सब कुछ, छीनकर हमारे महल पर अधिकार कर लिया। इन्द्र ने मेरी माँ को बन्दी बना लिया जो उस समय गर्भवती थीं। बल पूर्वक हमारी माँ को ले जाने का प्रयत्न करने पर नारद मुनि ने विरोध करके इन्द्र को रोका।''

''इन्द्र ने तर्क प्रस्तुत किया कि हिरण्यकशिपु की पत्नी अभी गर्भवती है और वे उसके बच्चे का जन्म होने तक उसे अपने नियंत्रण में रखना चाहते हैं। हिरण्यकशिपु की संतान से इस जगत को बचाने के लिए वे उसे पैदा होते ही मार देंगे। तब नारद मुनि ने इन्द्र को सूचित किया कि गर्भ में उपस्थित संतान भगवान का एक शुद्ध भक्त है और इन्द्र के लिए उसे मारना संभव नहीं है। उस रहस्य को जानने पर इन्द्र ने मेरी माँ को छोड़ दिया और स्वर्गलोक लौट गये। जाने से पहले इन्द्र ने नारद मुनि को दण्डवत प्रणाम किया और मेरी माँ की परिक्रमा भी की।''

''बाद में नारद मुनि ने मेरी माँ को अपनी कुटिया में शरण दी। उन्हों मेरी माँ को पिता के तपस्या करके वापस आने तक वहाँ रहने का सुझाव दिया। सुझाव को स्वीकार करते हुए मेरी माँ मुनि के आश्रम में रहने लगीं। मेरी माँ ने श्रद्धापूर्वक संत पुरुष नारद मुनि की सेवा की और प्रतिफल में नारद मुनि ने उन्हें पवित्र भगवत संदेश दिया। मैंने नारद मुनि के सभी उपदेशों को अपनी माता के गर्भ से ही सुना। मेरी माँ उन सभी उपदेशों को भूल गईं लेकिन मेरे स्मृति पटल पर वे सदैव ताजे रहते हैं।''

''प्रिय मित्रों! यदि तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास है तो तुम इस गहरे तत्व का ज्ञान बचपन में ही प्राप्त कर सकते हो। शास्त्रों के उपदेशानुसार परम भगवान के चरण कमलों की सेवा करते हुए उन्हें सर्वत्र देखना ही हमारे जीवन का उद्देश्य है।'' सभी असुर बच्चे प्रह्लाद के उपदेशों से प्रभावित हो गये और उनका हृदय शुद्ध भक्ति से भर गया। वे अपने अध्यापक की बताई बातें भूलकर प्रह्लाद के साथ भगवान की पवित्र महिमा का गायन करने लगे।

अध्यापकों ने देखा कि भक्ति के बारे में प्रह्लाद ने अन्य सहपाठियों को भी प्रभावित कर लिया है। तब खतरे की सूचना देने के लिए वे शीघ्र ही हिरण्यकशिपु के पास पहुँचे। यह सूचना मिलते ही हिरण्यकशिपु अत्यंत क्रोधित हो गया और प्रह्लाद का वध करने का निश्चय किया। अपने पुत्र के प्रति अपशब्द बोलते हुए उसने धमकी देते हुए कहा ''हे कुलनाशक आज मैं तुम्हारा

वध करके तुम्हें यमपुरी पहुँचा दूँगा। तुम्हे भली प्रकार ज्ञात है कि मेरे भय से संपूर्ण जगत काँपता है। लेकिन फिर भी तुम निर्भीक लगते हो। यह निर्भयता तुम्हें किस की शक्ति से प्राप्त हुई? वह शक्ति कौन है?''

उत्तर में अपने पिता से प्रह्लाद ने कहा ''हे राजन! तुम्हारी शक्ति का स्तोत्र ही मेरी शक्ति का भी स्तोत्र है। समस्त जीव उसी शक्ति स्तोत्र के नियंत्रण में हैं। हे पिताश्री! कृपया अपनी आसुरी सोच को त्याग दो। सभी जीवों से मित्रता रखो। वास्तव में आप का मन ही आप का सबसे बड़ा शत्रु है। अपने अन्दर के छह शत्रुओं को न जीत पाने वाला व्यक्ति यदि यह सोचे कि उसने दसों दिशाओं में सभी शत्रुओं को जीत लिया है, तो उसे मूर्ख माना जाता है। अपने अंदर के छह शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाले का इस जगत में कोई अन्य शत्रु ही नहीं होगा।''

भक्त प्रह्लाद के उपदेश सुनकर हिरण्यकशिपु बहुत क्रोधित हो गया और चिल्लाते हुए बोला ''हे मूर्ख बालक! तुम एसे बोल रहे हो जैसे तुम मुझसे बड़े हो। लगता है आज तुमने मेरे हाँथों से मरने का निश्चय कर लिया है। तुमने कहा कि सभी को नियंत्रित करने वाला कोई अन्य है। वह कहाँ है? यदि वह सर्वत्र है तो क्या तुम उसे इस खंभे में दिखा सकते हो? अब मैं अपनी तलवार से तुम्हारा सिर काट दूँगा। मैं देखता हूँ तुम्हारा भगवान तुम्हें कैसे बचाता है।'' तब हिरण्यकशिपु सभाग्रह के एक बड़े खंभे की ओर बढ़ा और उस पर घूंसे से प्रहार किया। बस इतना होते ही एक भारी गगनभेदी आवाज सभी जगह एसे गूँज गई कि मानो संपूर्ण सृष्टि का नाश होने वाला हो। (शेष अगले अंक में)

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. के बाग-बगीचे : देवस्थान के दिशा-निर्देश सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिनमें विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के दिशा-निर्देश में धार्मिक कार्यक्रम चलाये जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

श्री प्रपन्नामृतम्

(१५वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - ९९००९२६७७३

श्रीयादवप्रकाशाचार्य की शरणागति

उसी रात को स्वप्न में देवराज भगवान संशयग्रस्त यादवप्रकाश से- ''तुम्हारी माता की वाणी सत्य है, यतिराज की शरणागति के बिना तुम्हारी मुक्ति न होगी'' कह कर अन्तर्धान हो गये। किन्तु इस वाणी को सुनकर भी यादवप्रकाश कुछ निश्चय नहीं कर पाये। एक दिन भगवान वरदराज की अर्चना सेवा के लिए शिष्यों के साथ जा रहे हैं, सोचा कि यादवप्रकाश को इन्हीं का शिष्य होना उचित है। उसी समय आकाशवाणी भी तदनुकूल ही हुई। यादवप्रकाश का हित चाहने वाली माता ने आकर अपने मठ में सारी बात सुनायी। माता की वाणी सुनकर यादवप्रकाशाचार्य ने स्वप्न वाली घटना भी सुना डाली और माता की आज्ञा लेकर श्री कांचीपूर्ण स्वामीजी के पास आकर बोले- ''भगवान! मुझ शरणागत की आप रक्षा करें। मैं संशयग्रस्त हूँ। मेरा मन दीपशिखा की तरह चंचल हो उठा है। आप मेरी ओर से वरदराज भगवान से प्रार्थना करके मेरे विषय में उनकी आज्ञा मुझे बतलायें।'' यादवप्रकाश की प्रार्थना सुनकर श्री कांचीपूर्ण स्वामी भगवान वरदराज की सन्निधि में गये, भगवान बोले- ''यादव की शंकाओं का समाधान है कि वह अपनी माता के सहज निर्णय को नहीं मानने पर मैंने उसे आज्ञा दी। आप भी जाकर उससे रामानुजाचार्य की शरण में जाने को कहें। मानवत्व की प्राप्ति दुर्लभ है, उसमें भी ब्राह्मणत्व और फिर भी उज्जीवन परांगमुखता, उसी तरह आत्मप्रवंचना का नरक गमन की ओर है, जैसे कि शास्त्रज्ञ का शिष्य को यथोचित् शिक्षा का न देना।

भगवान देवराज की आज्ञा को श्री कांचीपूर्ण स्वामीजी से सुनकर हर्षविह्वल यादवप्रकाशाचार्य ने श्रीरामानुजाचार्य के पास आ प्रदक्षिणा करके साष्टांग करते हुए उनकी पूजा कर दीन भावना से कहा- ''दयासागर! संसार सागर में निमज्जित मेरे सारे अपराधों को दूर करके

(गतांक से)

आप मेरा उद्धार करें।'' यादवप्रकाश को दीन देखकर श्रीरामानुजाचार्य बोले- ''विप्रोत्तम! अब आपके सब दुःख दूर हो गये। क्योंकि आप पर तो भगवान की कृपा है।'' तदनंतर श्रीरामानुजाचार्य स्वामीजी ने यादवप्रकाश को उठाकर उनका सविधि पंचसंस्कार प्रतिपादन कर गोविन्ददास श्रीवैष्णव नाम रखकर उन्हें संन्यासाश्रम में प्रविष्ट करा दिया। तदनंतर समस्त श्रीवैष्णव ग्रन्थों का उन्हें उपदेश देते हुए श्रीरामानुजाचार्य स्वामीजी ने पुरातन पाप विमोचनार्थ गोविन्ददास को आज्ञा दी कि वे किसी ऐसे ग्रन्थ की रचना करें कि लोगों की श्रीवैष्णव धर्म में आस्था बढ़े। गुरु की आज्ञा पाकर गोविन्ददास जी ने ''यतीन्द्रधर्म-समुच्चय'' नामक त्रिदण्ड तथा संन्यास ग्रहण की उत्तमोत्तम विधि संयुक्त ग्रन्थ लिखा। फिर कुछ काल तक वे यतिपुंगव रामानुजाचार्यजी की सेवा में रहकर श्रीमन्नारायण के लोक में चले गये।

।। श्रीप्रपन्नामृत का १५वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

(गतांक से)

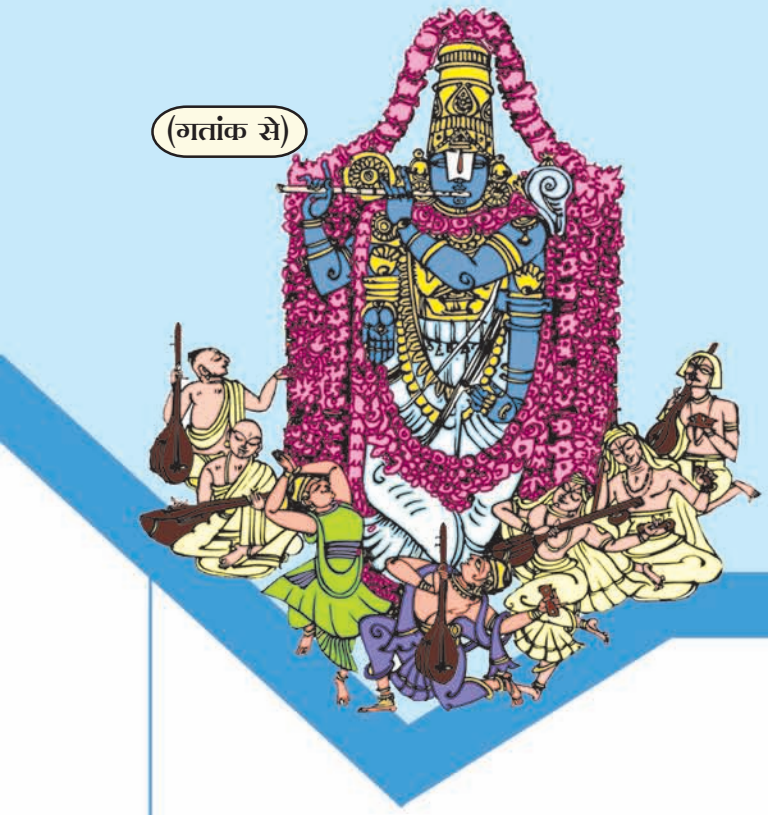

हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश

तेलुगु मूल - श्री एस.नागराजाचार्युलु
हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
मोबाइल - ९४९०९२४६१८

पुराणों में श्री वेंकटाधीश

हरिदासों ने तन्मयता के साथ पुराणों से आश्रित रहकर कलियुग के भूवैकुंठ के नाम से अभिहित सप्ताचल के स्वामी श्री वेंकटेश की स्तुति भक्ति परवशता के साथ, भगवान का अनुग्रह प्राप्त करने के बाद जो दिव्य अनुभूति मिली, उसकी बुनियादों पर स्वानुभव आनंद को गंभीर शब्दों के माध्यम से सप्ताचलाधीश का यशोगान किया। श्री वेंकटेश्वर भगवान वास्तव में चतुर्युगमूर्ति माने जाते हैं। कलियुग में नित्यकल्याण चक्रवर्ति बने। अनेकानेक अवतारों का जो मूल अवतार है, और जो अंतिम अवतार माना जाता है, उसमें अर्चामूर्ति बनकर भक्तों को अनुग्रहित कर रहे हैं। इन्हें ''कलौ वेंकटनायकः'' कहा जाता है। श्री वेंकटेश्वर स्वामी, अनेक देवताओं, गंधर्वों, किन्नरों, किम्पुरुषों, ऋषि-मुनियों, परमपुरुषों से नित्य पूजादि स्वीकारने वाले दैवशिखामणि हैं। श्री वेंकटेश भगवान, देवताओं के मुकुट हैं। ये हरिदासों के मुख्य देवता हैं। इसके लिए साक्ष्य प्रस्तुत है- हरिदास चाहे किसी देवता की पूजा करे, किसी भी तीर्थ का संदर्शन करे, चाहे कोई वैदिक सत्कर्म क्यों ही न करें, अंततोगत्वा, उसके समस्त कर्म का समर्पण धार्मिक जब बनते हैं, तब उस भक्त का जीवन यज्ञ वेंकटाद्रि के संदर्शन, वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन से परिसमाप्त होता है। यह यज्ञादि की परिसमाप्ति पूर्णाहुति के साथ होने की भांति मानी जा सकती है। इसीलिए, केवल कन्नड भाषी हरिदास ही नहीं बल्कि भारतवर्ष का हर भारतवासी, इस भूमि का पुत्र जो भक्त, कवि, गायक, कलाकार आदि श्री वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा मन भली-भांति करने के बाद ही यह मानने लगते हैं की उनकी तपस्या फल हुआ और उसे तपःफल मिला गया है। 'श्रीमद्भागवतम्' की एक उक्ति है ''यैर्जन्मलब्द नृषु भारताजिरे मुकुंद सेवौपयिक स्पृहात्मभिः''- यानी कई जन्मों के सत्कर्मानुष्ठान के फलस्वरूप भक्त को इस भारतभूमि में जन्म लेने का भाग्य मिलता है। पुराणों में भी इसी प्रकार के वचन प्रकट होते हैं, यथा -

''कलौतु भारते वर्षे मानुषं जन्म दुर्लभम्।
ततो वेंकट यात्रातु दुर्लभा सुकृतं विना।।
इत्सु त्वा वेंकटाधीशेहरिर्गरुड़वाहनः।
रमयासहितो रमे वेंकटाख्येमहीधरे।।''

इस कलियुग में, भारतभूमि में मनुष्य के रूप में जन्म लेना बड़ा दुर्लभ विषय ही है। पुराण यह भी कहते हैं कि जन्म-जन्मांतर के पुण्यकर्माचरण के फलस्वरूप यह मानव का जन्म मिलता है, साथ-ही-साथ श्री वेंकटगिरि की यात्रा करने का सौभाग्य भी मिलता है। इतना ही नहीं, पुराणोक्ति है कि गरुडवाहनारूढ़ श्रीहरि, अपनी देवी श्रीलक्ष्मी के साथ इस वेंकटगिरि को उत्तम तथा श्रेष्ठ मानकर इस पर विहार करता रहता है।

''मायावि परमानंदम् त्यक्त्वा वैकुंठमुत्तमम्।
स्वामि पुष्करिणी तीरे रमया सहमोदते।।''

वेंकटगिरि की श्रेष्ठता वेदों में प्रतिपादित है, समस्त ऋषियों, देवताओं, सिद्धों, साधकों, चारणों के लिए यह योग्य निवास स्थान है, यह शालग्रामात्मक गिरि है। आदिशेष का अवतार, प्रकृति के श्रेष्ठतम, रमणीय, सुंदर, सुवासित, सुगंध पुष्प समूहों से, फलों से संपन्न वृक्ष, लताओं के समूहों से भरा, अत्यंत क्रूर एवं साधु जानवरों से, कई प्रकार के खगों से भरा हुआ, सहस्राधिक तीर्थों यथा स्वामिपुष्करिणी, पापनाशनम्, आकाशगंगा नामक तीर्थों का आश्रय बनकर, जिस पर देवतागण वृक्ष बनकर रहते हैं, ऋषिगण पशु बनकर, पितृदेवता पक्षी बनकर, यक्ष-किन्नरादि बडे-बडे पत्थर जैसा रूप धारण कर निवास करते हैं, वह पुण्यक्षेत्र, श्रीमहालक्ष्मी मैया के लिए साक्षात् दिव्य सन्निधान बना है 'श्री वेंकटाचल।'

''एवं मनोहर श्रीमान् पर्वतः पुण्यकाननः।''

इतना ही नहीं, अंजनाद्रि, वृषाद्रि, शेषाद्रि, गरुडाद्रि, तीर्थाद्रि, श्रीनिवासाद्रि, चिन्तामणिगिरि, वृषभाद्रि, वराहाद्रि, ज्ञानाद्रि, कनकाद्रि, आनंदाद्रि, नीलाद्रि, क्रीडाद्रि, वैकुंठाद्रि, पुष्कराद्रि आदि नामों से अभिहित, रूपांतरित यह पर्वत श्रेष्ठ, इस कलियुग में 'वेंकटाद्रि' नाम से प्रसिद्ध हुआ है। यह वेंकटाद्रि इस पृथ्वी पर अतुलनीय है, इसकी समता कोई दूसरा पहाड़ नहीं रखता। पुराणों की उद्घोषणा भी यही है कि तीनों लोकों में 'वेंकटेश्वर' भगवान की समता कोई दूसरा भगवान नहीं रखता। पुराण यह भी कहते हैं-

''श्री वेंकटाद्रे महिमानमुत्तमम्।
जानंतिन ब्रह्म शिवेन्द्र पूर्वकाः
किमल्पवीर्या मनुजाः सृतिस्था
जानंतिविष्णो स्थलमद्भुतं च।।''

क्रमशः

युवता

भगवद्गीता और नौजवान

नरक के तीन द्वार

तेलुगु मूल - डॉ.वैष्णवाँघ्रि सेवक दास

हिन्दी अनुवाद - श्री अमोघ गौराँग दास

मोबाइल - ९८२१९१४६४२

सामान्यतः सभी लोग स्वर्ग और नरक नामक दो स्थानों से परिचित हैं। स्वर्ग में असीमित इन्द्रिय सुख भोगने एवं नरक में जाने पर अनगिनत कष्टों के मिलने की जानकारी भी सभी के पास है। धार्मिक व्यक्तियों को स्वर्ग की प्राप्ति होती है और अधार्मिक व्यक्तियों को अनेकों वर्षों तक नरक में रहना पड़ता है। धार्मिक व्यक्तियों को शास्त्रों एवं संतों के द्वारा यह ज्ञान प्राप्त होता है। अधार्मिक एवं नास्तिक व्यक्ति इन बातों को महत्व नहीं देते हैं। संपूर्ण जगत के अधिकतर मनुष्य इस जानकारी के न होने या होने पर भी अधार्मिक कार्यों में लिप्त रहते हैं, और इस प्रकार अपने लिए नरक का मार्ग निश्चित कर लेते हैं। नरकों में प्राप्त होने वाले विभिन्न प्रकार के दण्ड श्रीमद्भागवतम् में विस्तार रूप से बताये गये हैं। सभी की जानकारी के लिए विभिन्न अपवित्र कर्मों एवं उनसे मिलने वाले दण्डों का लिखित वर्णन शास्त्रों में भली प्रकार किया गया है। इस प्रकार घोर अपराधों के दण्ड श्रीमद्भागवतम् में बताये गये हैं और नरक की स्थिति उत्पन्न करने वाले सामान्यतः अदृश्य रहने वाले पापमय स्वभाव की सूचना भगवद्गीता से प्राप्त होती है। नरक के जीवन से बचने के लिए युवाओं को इस सूचना से भली प्रकार अवगत होना चाहिए। पापकर्मों के आदी व्यक्ति पापकर्मों को सामान्य कर्म मानते हैं। इसी प्रकार नरकीय कार्यों में लिप्त एवं उनसे संतप्त व्यक्ति उन कार्यों को सामान्य मानते हैं। इसलिए उन्हें यह कभी ज्ञात नहीं होता है कि उनका वह स्वभाव उन्हें निश्चित रूप से नरक की ओर ले जायेगा।

इस जगत में नरक के तीन द्वार सदैव खुले रहने की घोषणा करते हुए भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण के कहा ''इस नरक के तीन द्वार हैं - काम, क्रोध तथा लोभ। प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिए कि वह इन्हें त्याग दे, क्योंकि इनसे आत्मा का पतन होता हैं।'' (भगवद्गीता १६.२१) मनुष्यों की भलाई एवं उनके जीवन को शुभ

बनाने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं ही यह चेतावनी दी है। यद्यपि काम, क्रोध एवं लोभ अत्यंत सामान्य प्रतीत होते हैं, लेकिन वास्तव में वे सीधे नरक के द्वार हैं। इन द्वारों में प्रवेश करने वाले व्यक्ति निश्चित रूप से नरक में ही प्रवेश करते हैं। यद्यपि नरक एक ही है लेकिन उसमें प्रवेश करने के तीन-तीन द्वार हैं। जब नरक में प्रवेश करने के लिए एक ही द्वार पर्याप्त है तब उन व्यक्तियों के बारे में क्या कहना जो तीनों द्वारों से नरक में प्रवेश करते हैं। यद्यपि काम का अर्थ है काम पूर्ण इच्छाएँ किन्तु वास्तव में काम का तात्पर्य अनियंत्रित इच्छाओं से है। वर्तमान युवाओं को शीघ्रता पतित करने वाला यह काम न ही केवल उनके इस जीवन को नष्ट करता है अपितु उन्हें नरक तक भी ले जाता है। काम के वशीभूत युवाओं को यह जानना आवश्यक है कि उनका भविष्य पूर्णतया संकट में है। अतः वरिष्ठ व्यक्तियों, अध्यापकों एवं युवाओं के शुभचिंतकों को उन्हें नरक में गिरने से बचाने में सक्रिय होना चाहिए। उन्हें युवाओं को नरक के द्वारों में प्रवेश करने से रोकना चाहिए। अच्छी संगत में युवा काम इच्छाओं के संकट से बच सकते हैं। उचित निर्देश एवं संग न प्राप्त होने के कारण ही युवा काम का शिकार बन जाते हैं।

क्रोध नरक का दूसरा द्वार है। कामुक स्वभाव पर आपत्ति जताने वाले व्यक्तियों के प्रति क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध के आवेष से भ्रमित व्यक्ति अपनी काम इच्छाओं के पूर्ण होने में बाधा डालने वाले व्यक्ति को जान से मारने के लिए भी तत्पर हो जाता है। अतः क्रोध से वैरता एवं झगड़े की उत्पत्ति होती है। आगे बढ़कर यह हत्या का भी कारण बनता है। ऐसे परिणाम इस जीवन को पूर्णतया दुःखमय बना देते हैं। अतः अगले जन्मों का जीवन कितना दुःखमय होगा, यह बताने की आवश्यकता ही नहीं है। क्रोध से अनेक रोग भी पैदा होते हैं। अतः एक बुद्धिमान व्यक्ति को क्रोध नहीं करना चाहिए। किसी परिस्थिति से बाहर निकलने के लिए क्रोध का सहारा लेना उचित हो सकता है लेकिन क्रोध के आवेष में आना उचित नहीं है। आवश्यकता पड़ने पर क्रोध दिखाने का अधिकार सभी को है। एसे क्रोध से कोई हानि नहीं होती है।

अब नरक का तीसरा द्वार लोभ है। लोभ अर्थात् लालच का अर्थ है दूसरों को उनका हिस्सा न मिलने एवं सभी कुछ स्वयं लेने की इच्छा रखना। लालच के कारण ही प्रेमभाव, अपनापन, मित्रता, सामाजिक जीवन एवं अच्छे संबंध आदि नष्ट हो जाते हैं। अतः युवाओं को भगवद्गीता की चेतावनी से सतर्क हो जाना चाहिए। काम, क्रोध एवं लोभ से दूर रहने से जीवन सुरक्षित हो जाता है और नरक में प्रवेश करने का खतरा भी समाप्त हो जाता है। यह भगवद्गीता के संदेश की एक अनुपम भेंट है।

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में १०८ बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो नारायणाय।

(गतांक से)

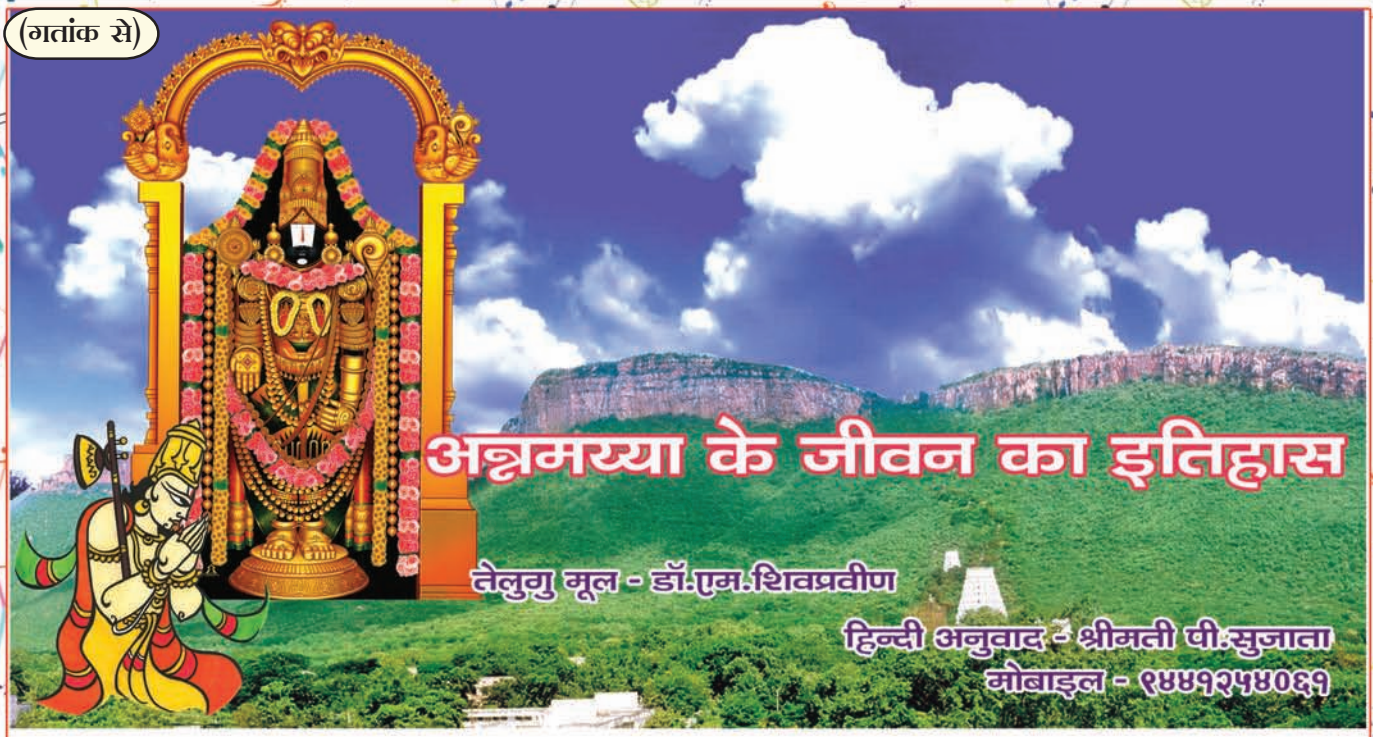

अन्नमय्या और पुरंदरदासरु

अन्नमय्या को जैसे श्री वेंकटेश्वर स्वामी आराध्य था, वैसे कर्णाटक राज्य में पले पुरंदरदास के पांडुरंगविट्ठल उपास्य दैव था। पुरंदरदास के आध्यात्मिक गुरु व्यासराय था। पुरंदरदास हरिदास के संप्रदाय का अवलंबक था। कन्नड भाषा में पुरंदरविट्ठल नामक मुद्रा से लगभग ५ लाख संकीर्तन इसके लिखे बताये जाते हैं। ऐसे कन्नड संप्रदाय के पदकर्त्ता महानुभाव पुरंदरदास ने अन्नमाचार्यजी के गान-प्राशस्त्य व माधुरी और संकीर्तना वैभव से वाकिफ हुआ था। अन्नमाचार्यजी के संकीर्तनों के प्रबल प्रभाव के बारे में अच्छी तरह सुनने के पश्चात् पुरंदरदास जी ने उसे साक्षात् श्रीहरि का अंश जाना और उसके दर्शन के लिए आतुर बना। वह महाशय झट तिरुमल आया, स्वामी का दर्शन किया और स्वामी के परम भक्त अन्नमय्या का दर्शन किया। दोनों के बीच कलियुग के कल्याणकारी, महिमा-विभाव-चक्रवर्ति, सप्तगिरि के मणिमकुटधारी श्री वेंकटेश्वर की महिमा वैभव की चर्चोपचर्चाएँ चलीं। आपसी भक्तिभाव लहरियों का ताल-मेल हुआ। दोनों महान् पदकर्त्ताओं में अपूर्व स्नेह भाव अंकुरित हो पाया। अन्नमाचार्य ने भी कन्नड पद-प्रणेता पुरंदरदास को साक्षात् पांडुरंगविट्ठल समझकर सस्नेह संभावित किया। दो विराट् पदरचना-संप्रदायों का मानो आपस में संगम हुआ।

अन्नमय्या की रचनाएँ

अन्नमय्या ने ३२ हजार संकीर्तनों की रचना कर, वेंकटेशांकित बनाया। उनमें कुछ योगमार्ग हैं, तो कुछ श्रृंगार-रसस्फोरक हैं। और कुछ पद-वैराग्यदायक हैं। अन्नमाचार्य ने अपनी मातृभाषा तेलुगु में रामायण भी रचा था। एक द्विपद-प्रबंध के रूप में उसने रामायण गाथा की संरचना की। वेंकटाचल माहात्म्य नाम का एक संस्कृत काव्य की भी रचना की। एक श्रृंगार मंजरी भी लिखी, जिसके साथ १२ अन्य शतकों का भी निर्माण किया था, जिनमें आज वेंकटेश्वर शतक-मात्र उपलब्ध है।

ताल्लपाका तिम्मक्का

अन्नमाचार्यजी की प्रथम पत्नी ताल्लपाका तिरुमलांबा है। इसके तिरुमलम्मा, तिरुमलक्का आदि भी नामांतर हैं। तेलुगु भाषा की सर्व प्रथम कवयित्री ताल्लपाका तिम्मक्का है। इसकी लिखी एकैक रचना सुभद्रा-कल्याण है। ११६३

चरणों से लिखा द्विपद काव्य है यह। वैसे सुभद्रा-कल्याण राशि में कम क्यों न हो, वासि में कतई कम नहीं, इस सुभद्रा-कल्याण का आधार महाभारत है। तिम्मक्का ने अलति-अलति तेलुगु शब्दों से इस काव्य की रचना की थी। ''ढंग से अहोबल और वेंकटाद्रि कतार से, उस पर कंचि के वरदों को पूजा'' कहती हुई, मूल में न होने के ढंग से, अर्जुन के द्वारा तिरुमल दिव्यक्षेत्र का संदर्शन करवाया था। तद्वारा श्री वेंकटेश्वर पर हुई अपनी परंपरागत भक्ति का प्रदर्शन किया था। सुभद्रा के पात्र को मूर्तिमंत किया हुआ विधान, सर्वत्र टपकता तेलुगूपन आदि विषयों में तिम्मक्का की कवन-निपुणता आदि विषयों का अगली पीढ़ी के चेमकूर वेंकट कवि आदियों ने अनुसरित किया था।

अन्नमय्या की संतती

अपने संकीर्तनों से तिरुमल श्री वेंकटेश्वर को रिझाये अन्नमय्या ने, श्रीनिवास के आशीर्वाद से अपने सरीखे दो पुत्र पाये। वे नरसयाचार्य, तिरुमलाचार्य हैं। ये दोनों भक्ति में, साहिती सृजन में सचमुच अन्नमय्या के वारिस हैं। पेदतिरुमलय्या के नाम से प्रसिद्ध हुए तिरुमलाचार्य, अपने पिता अन्नमय्या की आनति के प्रकार, रोज एक संकीर्तन लिख कर स्वामी को समर्पित करने का प्रतीत है। श्रृंगार, आध्यात्म संकीर्त्तन, वेंकटेश्वर वचन, श्रृंगार-दंडक, चक्रवाल मंजरी, वेंकटेश्वरोदाहरण, नीति सीस शतक, श्री वेंकटेश्वर प्रभात-स्तव - जैसे ग्रन्थ लिखकर स्वामी की सेवा में तर गया था। मंदिर के शासनाधारों से यह जान पड़ रहा है कि इसने तिरुमल श्री वेंकटेश्वर की विशिष्ट सेवाएँ की थी। इसके कुमार चिन्न तिरुमलय्या, पेद तिरुवेंगलनाथ, तिरुवेंगलनाथ (चिन्नन्ना), कोनेटि तिरुवेंगलनाथ भी दादाजी अन्नमाचार्य, पिताजी तिरुमलाचार्यों के मार्ग में तिरुमल वेंकटनाथ की साहिती सेवा कर तर गये। अन्नमय्या के पर-पोते चिनतिरुमलय्या के कुमार तिरुवेंगलप्पा, अन्नमय्या की कुमारिता तिरुमलांबा के पुत्र रेवणूरि वेंकटार्य ने भी अपने दादा-परदादाओं की तरह श्री वेंकटेश्वर की कृपावलब्ध संगीत-साहित्य पदार्चनाओं से स्वामी की सेवा कर उत्तम लोक-गति प्राप्त की।

ऐसे छोटा बीज महा बड़ का पेड बनने की तरह, एक अन्नमय्या से आरंभ श्रीनिवास की साहित्य पदार्चना, संकीर्तना यज्ञ अन्नमय्या के पश्चात् लगभग पाँच पीढियों तक सिद्ध हो चला। इनकी साहिती सेवा पर श्री वेंकटेश्वर आनंद रस डोलों पर तैरता रहा। उतने धन्यत्व पाकर, केवल अपने ताल्लपाका वंश को ही नहीं, बल्कि समस्त संसार को भी धन्य बनाया था इन ताल्लपाका के कवियों ने।

इतने संकीर्तना विराट्रूप के मूलकारक अन्नमय्या ने अपने ९५ संवत्सरों के परिपूर्ण जीवन बिता कर दुंदुभी नाम संवत्सर फाल्गुण बहुल द्वादशी के दिन (सन् १५०३, फरवरी २३ पर) अपने आराध्य दैव श्री वेंकटेश्वर में ऐक्य हुआ था। पदकविता-पितामह, संकीर्तनाचार्य, पंचमागम सार्वभौम, द्रविडागम सार्वभौम-जैसे बिरुद नाम पाये अन्नमय्या का इतिहास, तिरुमल के इतिहास में कभी न धुले जाने वाला एक विशिष्ट अध्याय है।

अस्तु!!

समाप्त

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - ९४०३७२७९२७

अडियै त्तोडर्न्देळु मैवर्हट्काय्, अन्नु भारतप्पोर्
मुडिय प्परिनेडुन्तेर् विडुंकोनै, मुळुदुणर्न्द
अडिय र्क्कमुद मिरामानुजन् एन्नैयाळ वन्दु इ -
प्पडियिल् पिरन्ददु, मत्तिल्लै कारणम् पार्त्तिडिले ॥५१॥

स्वपादाब्जानुवर्तनधन्यात्मपञ्चपाण्डवकृते पुरा भारतसमरभुवि निर्व्यूढसारथ्यं भगवन्तं सम्यगवगतवताम् (सौशील्यगुण एव भगवतो निरूपकधर्म इति ज्ञातवताम्) भक्तानां परमभोग्यभूतो भगवान् रामानुज इह भुव्यवातरत् केवलं मामनुग्रहीतुम्; नान्यदस्ति किमपि तदवतारनिदानम्॥

पूर्वकाल में अपने पादारविंदों का आश्रयण कर धन्य बनने बाले पंचपांडवों के लिए (अर्जुन का सारथि बनकर) घोडे जुडा हुआ बडा रथ हांक कर दुर्योधनादियों का संहार करनेवाले, भगवान को (अर्थात् भगवान के स्वरूप, गुण, विभूति इत्यादियों अथवा सौशील्य आश्रित पारतंत्र्य इत्यादि शुभगुणों को) पूर्णरूप से समझनेवाले भक्तों के अमृतवत् परमभोग्य रहनेवाले श्रीरामानुज स्वामीजी ने मुझ पर

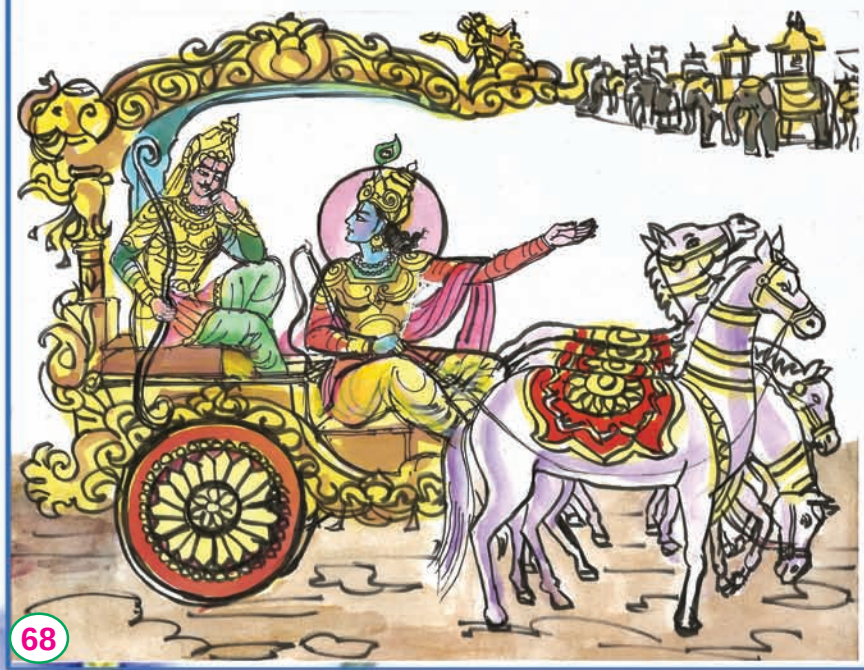

अनुग्रह करने के लिए ही इस भूतल पर अवतार लिया; विचार करने पर दूसरा कोई कारण नहीं दीखता। (यद्यपि श्री स्वामीजी के अवतार के अनेक प्रयोजन बताये जाते हैं; तथापि गाढ विचार करने पर कहना पडता है कि दूसरे सभी प्रयोजन आपके अवतार के बिना भी बन सकते हैं; मुझ एकका उद्धार तो दूसरे किसी प्रकार नहीं हो सकता। अतः मेरे लिए ही आपका अवतार हुआ।)

क्रमशः

षोडशोपचार - विशिष्टता

श्री वेमुनूरि राजमौलि, मोबाइल - ८९८५२३९३१३

ईश्वर के प्रति तैल चारा की भाँति अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित होनेवाली प्रेम-भावना ही भक्ति है। यह साधारण प्रेम की अपेक्षा परम-प्रेम के रूप में रहती है। निरंतर भगवान की सेवा करना और भावना करना ही भक्ति है। भगवान की सेवाएँ ही उपचार हैं। उन-उन संप्रदायों के लोगों ने और आगम-शास्त्र जाननेवालों ने इन्हें अनेकों तरह से अभिवर्णित किया। उपचार का अर्थ सम्मान और सेवा है। अनन्य भक्ति व गौरव के साथ एक क्रम रीति से भगवान का सेवन करना उपचार कह लाता है। उप - समीप; चारः - चरना है। याने भगवान के समीप रहकर उस दिव्य मूर्ति को किये जाने वाले सेवन ही उपचार हैं। भगवान का अनुग्रह पाने की जाने वाली आवश्यक सेवाएँ ही उपचार हैं। मानव-जीवन का जो लक्ष्य भगवत्प्राप्ति है, उसे पाने के लिए ये उपचार कितने ही काम आते हैं। उपचारों के निर्वहण के समय निश्चल भक्ति, निर्मल हृदय, भरपूर भक्ति होनी चाहिए। ''अन्यस्मात् सौलभ्यं'' - भक्ति-सूत्र हैं। भगवत्प्राप्ति के लिए भक्ति से बढ़कर कोई अन्य सरल, परम उपाय नहीं है। भक्ति-शास्त्रों और महा भक्तों ने भगवान का भक्ति-प्रियत्व और भक्त-वशत्व की प्रशंसा की। कलि-काल में भक्ति-मार्ग ही परम सुलभ मार्ग है। मुक्ति के लिए भक्ति ही सोपान है।

उपचार अनेकों तरह के होते हैं। ये हैं - पंचोपचार; दशोपचार; चतुष्षष्टि (६४) उपचार; षोडश (१६) उपचार। इनमें से षोडशोपचार-पूजा-पद्धति सुप्रसिद्ध है। सारे देवताओं की पूजा षोडशापचार-सहित करने का विधान सर्वत्र आचरण में है। बिना किसी रोकटोक भक्ति-पूर्वक, सच्चे हृदय से ईश्वर की पूजा करने की क्षमता भक्त में होनी चाहिए। उपचारों के द्वारा हृदय भक्ति से भर जाता है। और मुक्ति का साधन बन जाता है।

कर्मातीत स्थिति को सिद्धि के लिए निष्काम-कर्म निष्ठा की अत्यंत आवश्यकता है। इह व पर लोकों से मुक्त हो रहने के लिए तथा निष्कलंक चित्त से निष्कामी हो भगवत्प्रीति केलिए भगवान की पूजा करना ही षोडशोपचारों की विशिष्टता है। चाहे कितने ही प्रकार के उपचार क्यों न हों, षोडशोपचार-पूजा-पद्धति सर्वत्र आमोदयोग्य है; आचरण-साध्य भी है। अष्टोत्तरशत-संख्या (१०८) को जितनी प्रामुख्यता है, उतनी प्रामुख्यता षोडश (१६) संख्या को भी है।

षोडशनाम, षोडशआयुध, षोडशचन्द्र कलाएँ जैसी षोडश-संख्याएँ हमारे वाङ्मय में बहुत कुछ मिलती हैं।

भगवान के उपचारों में षोडशोपचारों का विशिष्ट स्थान है। फिर भी इनमें संप्रदाय-भेद पाये जाते हैं। सालग्राम आदि स्थिर-मूर्तियों का आवाहन और विसर्जन नहीं रहता। सालग्रामों और स्वयंभू मूर्तियों में भगवान, नित्य-सन्निहित हो रहता हैं। इस तरह उन-उन सन्निवेशों के अनुसार उपचारों में भेद पाये जाते हैं। कुछ भी हो, आमतौर पर षोड़श(१६) उपचार अर्चन में पाये जाते हैं।

''पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनं, स्नानं, वस्त्रं, भूषणं, गंधं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं (इस नैवेद्य के समय भी आचमन रहता है), तांबूलं, अर्चनं, स्तोत्रं, तर्पणं, नमस्कारं'' - ये कुछ संप्रदायों के अनुसार भगवान को किये जाने वाले षोडशोपचार हैं।

कुछ संप्रदायों में - ''आवाहनं, आसनं, पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, अभिषेकं, वस्त्रं, यज्ञोपवीतं, गंधं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, तांबूलं, प्रदक्षिणा और नमस्कार नामक उपचार पाये जाते हैं।'' ज्यादातर इन्हीं उपचारों का आचरण पाया जाता है।

षोडशोपचारों का क्रम, आचरण का विधान तथा फल के बारे में संग्रह रूप में जान लेंगे--

सूर्योदय से पहले, ब्राह्मी-काल में भगवन्नाम-स्मरण करते नींद से उठकर, स्नान करके, शुभ्र वस्त्रों का धारण करना चाहिए। अपने-अपने संप्रदाय के अनुसार मुख पर तिरुनामं, विभूति, कुंकुम का धारण करके इष्ट-देवता का स्मरण करते पूजा-मंदिर में प्रवेश करना चाहिए। पूजा-मंदिर को रंगवल्लियों से सजाना चाहिए। दीप-स्तंभों को हल्दी व कुंकुम लगाकर दीपाराधन करना चाहिए। इसके पश्चात् भगवान के चित्रपटों को भी कुंकुम लगाकर, फूल अर्पित करके नमस्कार करना चाहिए। छोटी-सी चटाई या पीठ (आसन) पर बैठकर पूजा प्रारंभ करनी चाहिए।

पूजा के लिए पंचपात्र (पाँच पात्र) लेकर, एक कलश को पानी से भर कर उसमें एक उद्धरणी रखनी चाहिए। पंच पात्रों में से प्रथम पात्र को अर्घ्य के लिए, द्वितीय पात्र को पाद्य के लिए, तृतीय पात्र को आचमन के लिए, चतुर्थ पात्र को अभिषेक के लिए तथा पंचम पात्र को सर्वार्थतोय के लिए उपयोग करना चाहिए। एक और पात्र को परिग्रहण के लिए उपयोग करना चाहिए। अर्घ्यपाद्यों के निमित्त स्वामी को दिखाये गये जल को छटवाँ पात्र याने परिग्रहण-पात्र में डालना चाहिए। इस जल को पूजा के पश्चात् तीर्थ के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

''ओं अच्युताय नमः, ओं अनन्ताय नमः, ओं गोविंदाय नमः'' - का स्मरण करते तीन बार उद्धरणी से दायीं हथेली में जल लेकर, होंटों को न छूने की रीति से स्वीकार करना चाहिए। इस तरह करने से शरीर, मुँह, मन परिशुद्ध बनते हैं; हम ईश्वर की पूजा करने के योग्य बनते हैं। अब हमें अपने-अपने संप्रदायों के अनुसार ऊपर्लिखित षोडशोपचारों सहित पूजा-अर्चना करनी चाहिए।

आसनं - किसी देवता-मूर्ति अथवा चित्रपट को एक पीठ (आसन) पर बिठा कर फूलों से सजाना चाहिए (चान्दी के सिंहासन का भी उपयोग कर सकते हैं।)

घंटानाद - दुष्ट शक्तियों को दूर भगाने, देवताओं के आगमन के लिए घंटानाद करना चाहिए। पंचेंद्रियों में से एक कान को इस शब्द के सुनायी देने पर एक तरह से कान के लिए व्यायाम होगा; चंचल मन को एकाग्रता मिलेगी; ऐसा घंटानाद की प्रक्रिया काम आयेगी। दुर्भाव ही राक्षस हैं; सद्भावनाएँ ही देवता लोग हैं। सद्भावना से की जानेवाली पूजाएँ ही सत्फल देते हैं।

ध्वनि और नाद - नाद शब्द के दो रूप हैं। ध्वनि, एक बार सुनायी देकर रूक जाती है। नाद, अविच्छिन्न रूप से सुनायी देनेवाला शब्द है। नाद में न=प्राण; द=अग्नि है, तो प्राण और अग्नि का संयोग ही नाद है। आहत और अनाहत, नाद के दो रूप हैं। आहत-नाद का मतलब कान को स्पष्ट रूप से सुनायी देनेवाला नाद है। यह श्राव्य हो रसानुभूति एवं आनन्द को प्रदान करता है। अनाहत-नाद, निश्चल मन वाले योगियों के लिए ही अनुभवैकवेद्य है। यह, मुक्तिदायक है। इसलिए देवतार्चन में पहले घंटानाद प्रक्रिया प्रारंभ होती है।

आवाहनं (स्वागत) - भगवत् ध्यान के द्वारा भगवान का आवाहन किया जाता है। भगवान के नित्य सान्निध्य के कारण सालग्राम की पूजा में आवाहन-स्वागत की प्रक्रिया नहीं होती।

अर्घ्यं, पाद्यं, आचमनीयं - भगवान के हाथों के प्रक्षालन के लिए उपयोग में आने वाला जल अर्घ्य है। इस जल में अष्ट-अर्घ्य-द्रव्यों का उपयोग करना चाहिए; ऐसा आयुर्वेद-शास्त्र बताता है। वे हैं- दर्भ, अक्षत, नूगुलु (एक प्रकार का अन्न), धान, यव (जौ), माष, कोर्रलु (साँवाँ जैसा एक और सफेद धान) सरसों। इन सभी का मिला हुआ जल, अर्घ्य के लिए उपयोग करना चाहिए।

भगवान के पाद-प्रक्षालन के लिए उपयोग किया जाने वाला सुगंधि-जल, पाद्य है। इसमें पद्म, विष्णुक्रांत, काला साँवाँ, दूर्वा डालना चाहिए। इसमें आँवला का भी उपयोग कर सकते हैं। ये हैं; पाद्य-द्रव्य। दैव की मुखशुद्धि के लिए उपयोग किया जानेवाला सुगन्धि-जल आचमनीय है। इसमें इलैची, लवंग, उशीर, तक्कोलं का उपयोग करना चाहिए। श्री वेंकटेश्वर सुप्रभात में ''एला, लवंग, घनसार सुगंधि तीर्थं'' नामक एक चरण है। अभिषेक के

लिए हरा कपूर, उशीर, तक्कोलं, इलैची, लवंग का मिला हुआ जल उपयोग करना चाहिए।

स्नान में पंचामृत का विशिष्ट स्थान है। गाय का दूध, गाय का दही, गाय का घी, शहद और नारियल के पानी का उपयोग करते हैं। कुछ लोग दूध, दही, घी, शहद, शकर और नारियल के पानी का उपयोग करते हैं। ये, संप्रदाय भेद हैं। पंचामृत से देह को तुष्टि, पुष्टि तथा अनेकों पोषक-पदार्थ मिलते हैं। एला, लवंग घनसार (हरा कपूर) मिश्रित तीर्थ के सेवन से आरोग्य, तेज, ओज, सकल संपत्तियाँ तथा कीर्ति-प्रतिष्ठाएँ प्राप्त होते हैं। श्री वेंकटेश्वरस्वामी का पाद-तीर्थ-सेवन; इह-पर-आनन्ददायक है।

पंचामृत में दूध की विशिष्टता - जिसमें समस्त पोषक पदार्थ पाये जाते हैं, वह है, गोक्षीर (गाय का दूध)। गाय के दूध में ओज, धारणा-शक्ति, शुक्रवृद्धि करने के गुण हैं। श्रम, भ्रम, मद, भूख-प्यास, ज्वर, रक्त-पित्त आदि कम हो जाते हैं। दूध में रहने वाले कैलिश्यम, भास्वर, 'ए' विटामिन से हड्डियों को पुष्टि मिलती है। जिगर मजबूत बनता है। क्रमशः सारे अवयवों को पुष्टि मिलती है।

दधि (दही) - दही, मेधा-शक्ति बढाता है। दही से वीर्य-वृद्धि होती है। पैत्य, कम होता है; शरीर को पुष्टि मिलती है; वात दूर होता है।

घी - वास्तव में आरोग्य व आयुर्वृद्धि केलिए घी, अमृत तुल्य है। देवताओं के लिए घी ही आहार है। उन्हें आप्यायन (तृप्ति) पहुँचानेवाला पदार्थ घी ही है। भोजन में घी डाल लेने से उदर में व्याप्त प्रकोपी-वायु शांत हो जाती है। आरोग्य बना रहता है। जीर्ण-शक्ति बढ़ती है।

शहद (मधु) - मिठास, कसैलापन, मिला हुआ शहद श्रेष्ठ है। इसका रंग ही अलग है। स्वादिष्ट पदार्थ है मधु। पुन्सियाँ कम होने में, हड्डियों को जोडने में, चरबी कम करने में, जिगर को मजबूत करने में, वाक्शक्ति को बढ़ाने में शहद कितना ही उपयोगकारी है। प्रकृति-प्रदत्त, महाशक्तिवान पदार्थ मधु है।

नारियल का पानी (नारिकेल-जल) - शुचि व स्वादिष्ट-जल, नारिकेल-जल है। शीतलता पहुँचाता है; प्यास बुझाता है; जठराग्नि को बढ़ाता है; बल पहुँचाता है। अनेकों रोगों को दूर करने का गुण नारिकेल-जल में है।

शुद्धोदक - पंचामृत-स्नान के अनन्तर दैव को शुद्धोदक-स्नान कराया जाता है। दैव का अभिषेक यों ही नहीं कराया जाता। जल में तुलसी-दल, हरा कपूर, उशीर, श्रीगन्ध इत्यादि मिलाकर शुद्धोदक-स्नान कराया जाता है। कम से कम तुलसी का दल तो भी अभिषेक-जल में डालना चाहिए। इस तरह तैयार किये हुए महत्तर औषधीय-गुण वाले पवित्र जल को दक्षिणावर्त-शंख में डालकर स्वामीजी के अभिषेक के लिए उपयोग करते हैं। शंख, लक्ष्मी-स्वरूप है। श्रीहरि का पूजाभिषेक करने का अधिकार लक्ष्मी देवी को ही है। इसलिए लक्ष्मी के मुखान्तर में शंख में डाले जल से स्वामी का अभिषेक करना चाहिए। श्रद्धा व भक्ति के साथ इस दिव्य तीर्थ का सेवन करने से लोग नीरोग बनते हैं, ऐसा परमपुरुषसंहिता ने बताया।

गंधं, वस्त्रं, आभरणं - अभिषेक के अनन्तर सफेद, मुलायम वस्त्र से देवता मूर्ति की शुद्धि करनी चाहिए। इसके पश्चात वस्त्र द्वय, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत समर्पित करने चाहिए। प्रति नित्य प्रत्यक्ष रूप से वस्त्र व यज्ञोपवीत समर्पित नहीं कर सकते। फिर भी मंत्रपूर्वक समर्पित करने की भावना से पूजा-अर्चना करने से स्वामी संतुष्ट हो जाते हैं। प्रति दिन गन्ध और अक्षत तो अवश्य पूजा में अर्पित करने चाहिए।

धूप, दीप - धूप, समर्पण के लिए सांब्राणि, दशांगं, गुग्गिलं, पाल्मडि इत्यादि सुगंध द्रव्यों का उपयोग करना चाहिए। इनका धुआँ और गन्ध कलुषित वातावरण को दूर करते हैं। रोगकारक सूक्ष्म-जीवों का नाश करते हैं। दीप जलाने के लिए गाय का घी या तिल का तेल श्रेष्ठ माना जाता है। गाय के घी से जलाये गये दीपों से निकलने वाला धुआँ तथा गंध श्वास संबंधी रोगों का निवारण करते हैं। इसकी कांति नेत्रों के लिए लाभकारी है; औषधी के रूप में काम करती है।

तुलसी, बिल्व, पुष्प - ईश्वर की पूजा के लिए तुलसी, बिल्व पत्र, सुगन्धभरित पुष्पों का उपयोग करना चाहिए। जिस दिन पुष्प, पत्र तोडते हैं, उसी दिन उनका उपयोग करना चाहिए। पूजा के समय आवश्यकता के अनुसार सहस्र नामावली या अष्टोत्तर शतनामावली अथवा चतुर्विंशति (२४) नामावली का पठन करते भगवान की पत्रों व पुष्पों से पूजा करनी चाहिए। भगवान के दिव्य नामों का संस्कृत में चतुर्थी विभक्त्यां तक (कारकांतक) बनाकर, नाम से पहले 'ओं' नामक प्रणवाक्षर, बीच में ''नाम'' तथा अंत में 'नमः' लगाकर उच्चारण करते भक्ति व श्रद्धा के साथ पूजा-अर्चना करनी चाहिए। नाम के अंत में ''ओं'' लगाकर पूजना नहीं चाहिए। यह दोष-कारक है। उदाहरण के लिए ''ओं केशवाय नमः'' कहकर उच्चारण करना चाहिए। न कि केशवाय नमः ओं, माधवाय नमः ओं। ''ओं केशवाय नमः'' का अर्थ है निराकार, ओंकार रूपी परमात्मा - भक्त रक्षण के लिए ''केशव'' साकार मूर्ति बने; वैसे केशव का मैं नमस्कार करता हूँ। निराकार में से साकार रूप का उद्भव होता है। ''ओं'' का उच्चारण करते समय श्वास लेकर नामोच्चारण करके ''नमः'' का उच्चारण करते वक्त श्वास छोडना श्रेयस्कर है।

मन्त्रोच्चारण - मन की तथा मनन करने वालों की रक्षा करने वाला 'मन्त्र' है यह। इसलिए मंत्रों का पठन, स्पष्ट व जागरूकता से, दोष-रहित करना चाहिए। वेद मंत्रों का तो पठन अवश्य स्वर दोष रहित करना चाहिए। तभी ये मन्त्र तेजोवान तथा शक्तिवान बनकर हमें सुफल देते हैं। वेद-मन्त्र-नाद का श्रवण करने पर हमारी सूक्ष्मातिसूक्ष्म नाडियाँ एक क्रम पद्धति से स्पन्दित होती हैं। रक्त प्रसरण सुचारु रूप से चलता है। वेद के नाद का श्रवण प्रभाव महामहिमान्वित होता है।

नैवेद्य (निवेदन) - ''भगवान को निवेदन किये बिना खाने से पाप लगता है'' - ऐसा शास्त्र वचन है। इसलिए कोई भी पदार्थ क्यों न हो हमारे स्वीकार करने से पहले भगवान को निवेदित करके (समर्पित करके), भगवान का प्रसाद मान कर खाना चाहिए। मात्र सात्विकाहार ही, ईश्वर को निवेदित करना चाहिए। परिशुद्ध व सात्विक आहार से ही हमारा मन व बुद्धि सात्विक बनते हैं; सद्भावों एवं सत् कार्याचरणों से सुख व शान्ति प्राप्त होते हैं। पकाकर एक याम (तीन घंटे का समय) से ज्यादा बीता हुआ, अपरिपक्व, स्वाद रहित, जूठन, अपवित्र पदार्थों का निवेदन नहीं करना चाहिए।

आरती - कपूर या घी में भिगायी गयी बत्तियों से आरती उतारनी चाहिए। आरती उतारते समय घंटानाद करना हमारा संप्रदाय है। कपूर की कांति में ईश्वर के दर्शन करना हमारे लिए महाभाग्य है। कपूर-आरती का धुआँ व गंध अनेकों तरह के सूक्ष्म-क्रिमियों का निर्मूलन करते हैं।

प्रदक्षिणा-नमस्कार (वन्दन) - देवतार्चन के पश्चात् अन्त में प्रदक्षिणा-नमस्कार करना चाहिए। भक्ति व श्रद्धा के साथ धीरे-धीरे प्रदक्षिणा (दायीं तरफ से बाईं तरफ घूमना) करके नमस्कार करना चाहिए।

पूजा के समय अथवा प्रदक्षिणा-नमस्कार के वक्त और जप-होम आदि का निर्वहण करते समय अंग-वस्त्र को कमर से लपेट लेना, एक प्रकार का संप्रदाय है। अंग-वस्त्र को ओढ लेकर पूजादियों का निर्वहण नहीं करना चाहिए। बाद में क्षमा-प्रार्थना करनी चाहिए। ''यदि पूजा में दोष हो, तो क्षमा कीजिए'' कहते फूल व अक्षत ईश्वर के पाद-पद्मों पर भक्ति व श्रद्धा के साथ समर्पित करने चाहिए।

जिस प्रकार अष्टोत्तर शतनामावली से स्वामी की पूजा करते हैं, उसी प्रकार षोडशोपचार सहित भगवान का सेवन व आराधन कर सकते हैं। जब चन्द्र षोडश कलाओं से भरे रहते हैं, तब परिपूर्ण बनते हैं। वैसे ही ईश्वर की आराधना भी षोडशोपचार सहित करने पर ही उसे परिपूर्णता प्राप्त होती हैं। पंचभूत, पंच प्राण, पंचेंद्रिय व मन मिलकर (१६) सोलह तत्त्व होते हैं। इन तत्त्वों का समन्वय ही षोडशोपचारात्मक पूजा विधान का अंतरार्थ है। कोई भी उपचार क्यों न संपन्न करते हों यदि भक्ति के साथ न होता हो, वह अपचार ही होगा।

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य

आयोजक - महामहोपाध्याय समुद्राल लक्ष्मण्या

हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी

मोबाइल - ९९४९८७२१४९

पाठकों केलिए कुछ सूचनाएँ

१) प्रत्येक पाठ में शब्दों को याद किया जाना चाहिए।

२) प्रत्येक पाठ के शब्दों को दिन में पाँच या छे बार मनन करना चाहिए।

३) प्रत्येक पाठ के नीचे दिये गये वाक्यों को अभ्यास केलिए संस्कृत में अनुवाद करना चाहिए। बदलते समय पाठ में शब्दों को न देखें। घर में अपने सहपाठियों के साथ संवाद करते हुए उन्हें संस्कृत बोलने केलिए प्रोत्साहित करें।

प्रथमः पाठः = पहला पाठ

सः = यह, वह (पुं)	कुत्र = कहाँ	अस्ति = है
त्वं = तुम	तत्र = वहाँ	असि = उपस्थित हैं
अहं = मैं	अत्र = यहाँ	अस्मि = उपस्थित हूँ

अ) १) सः अस्ति २) अहं तत्र अस्मि ३) त्वं कुत्र असि? ४) सः तत्र अस्ति ५) अहं अत्र अस्मि
६) त्वं तत्र असि ७) सः कुत्र अस्ति? ८) सः तत्र अस्ति ९) त्वं तत्र असि १०) अहं कुत्र अस्मि?

आ) १) तुम कहाँ उपस्थित हैं? २) मैं यहाँ उपस्थित हूँ ३) वह वहाँ हैं ४) तुम यहाँ उपस्थित हैं
५) मैं कहाँ उपस्थित हूँ? ६) तुम उपस्थित हैं ७) मैं उपस्थित हूँ ८) वह उपस्थित हैं?
९) मैं वहाँ उपस्थित हूँ १०) तुम वहाँ उपस्थित हैं

अभ्यास) १) यह/वह है २) मैं वहाँ उपस्थित हूँ ३) तुम कहाँ उपस्थित हैं? ४) यह/वह वहाँ है
५) मैं यहाँ उपस्थित हूँ ६) तुम वहाँ उपस्थित हैं ७) यह/वह कहाँ है?
८) यह/वह वहाँ है ९) तुम वहाँ उपस्थित हैं १०) मैं कहाँ उपस्थित हूँ?

आ-अभ्यास) १) एतत् किम् अस्ति? २) अहं अत्र अस्मि ३) सः तत्र अस्ति ४) अहं कुत्र अस्मि?
५) एतत् अस्ति ६) अहं अस्मि ७) सः अस्ति ८) अहं तत्र अस्मि ९) एतत् तत्र अस्ति १०) एतत् तत्र अस्ति

अक्तूबर महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र
मोबाइल - ९९८९३७६६२५

मेषराशि - मासफल सामान्य रहेगा। जातक का स्वास्थ्य बाधा, अनावश्यक उलझनों से बचना चाहिये। मनोविकार रहेगा, धातुरोग क्षय से दुर्बलता। कार्य क्षेत्रों में प्रतिकूलता। रामरक्षा स्तोत्र का नियमित पाठ करना श्रेयस्कर सिद्ध होगा।

वृषभराशि - अनावश्यक वाद-विवाद से बचकर रहे, मानसिक चिन्ता न करें। भोजन समय पर करें, स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। कार्यक्षेत्रों में सफलता, जरूरी होने पर घर से बाहर निकले चोट-चपेट दुर्घटना की सम्भावनाएँ हो सकती है। रूके हुए कार्यों में प्रगति।

मिथुनराशि - मासफल मध्यम रहेगा। शारीरिक कष्ट मानसिक तनाव, निरर्थक मत भेद, वाद विवाद की स्थिति बनी रहेगी। मन में कुत्सित विचारों का उदय, पारिवारिक चिन्ता। व्यापार में अल्प लाभ।

कर्कराशि - कठिन परिश्रम से शिक्षा में सफलता, नौकरी प्राप्ति एवं अभिष्ट कार्य कि सिद्धि होगी। श्रेष्ठजनों का समागम, रूके धन की प्राप्ति, वाहन सुख, दाम्पत्य सुख, रोजी-रोजगार में अनुकूलता रहेगी। नये अवसरों की प्राप्ति।

सिंहराशि - मासफल उत्तम रहेगा। नौकरी प्राप्ति, शिक्षा में प्रगति होगी। न्यायालयी विवादों में सफलता मिलेगी। व्यवसाय में लाभ, गृह निर्माण, भूमि-क्रय-विक्रय के कार्यों में लाभ। शत्रुपक्ष निर्बल होंगे। स्थिर सम्पत्ति प्राप्ति।

कन्याराशि - स्वास्थ्य सामान्य जैसे उदर विकार, पैर में चोट-पीड़ा, दिनचर्या में परिवर्तन। लेनदेन-क्रय-विक्रय, भवन निर्माण आदि कार्यों में धोखा धड़ी की सम्भावनाएँ विशेष है अतः सावधानी पूर्वक कार्य करना लाभप्रद रहेगा।

तुलाराशि - शिक्षा में सफलता, नौकरी की प्राप्ति, नौकरी में पदोन्नति, व्यवसाय में लाभ, सन्तान सुख, पत्नी सुख, अनेक यात्राएँ होंगी। इष्ट मित्रों तथा स्वजनों के सहयोग से अभिष्टकार्य की सिद्धि होगी। मासांत कष्ट दायक रहेगा जिससे मतभेद उत्पन्न होंगे।

वृश्चिकराशि - शिक्षा में प्रगति तथा नौकरी के अवसर प्राप्त होंगे। उत्तम भोजन, सुंदर वस्त्र, शयन-सुख का लाभ, दाम्पत्य सुख, संतान सुख, उपहार पुरस्कारादि की प्राप्ति। उत्तरार्द्ध में मानसिक तनाव, असन्तोष इत्यादि से मन खिन्न रहेगा।

धनुराशि - व्यापार में लाभ, राजनीति के क्षेत्रों में लाभ एवं सम्मान प्राप्ति। इष्ट मित्र, स्वजन, स्त्री-संतान, कुटुम्ब से प्रसन्नता और कार्य सिद्धि। कठिन परिश्रम से शिक्षा में प्रगति। कृषि-वाणिज्य कार्यों से लाभ।

मकरराशि - समय-समय पर शारीरिक कष्ट, मानसिक तनाव, परिवार में उलझने तथा आन्तरिक मतभेद की स्थिति बनी रहेगी। नेत्र विकार, जातक को वाहन आदि से चोट-चपेट लगने तथा आँपरेशन आदि होने के भी योग है।

कुम्भराशि - पारिवारिक जिम्मेदारियों का उचित निर्वहन, संतान प्राप्ति, सामाजिक कार्य एवं पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। अन्य पक्ष अनुकूल, इष्टमित्रों के सहयोग से अभिष्टकार्य की सिद्धि होगी।

मीनराशि - स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धन-धान्य-सौभाग्य वृद्धि, इष्ट-मित्रों का सहयोग, शिक्षा में प्रगति तथा नौकरी के अवसर प्राप्त होंगे। प्रतियोगी क्षेत्र में सफलता मिलेगी। सुखद देश विदेश की यात्राएँ होगी।

Edited and Published on behalf of T.T.Devasthanams by **Prof.K.Rajagopalan,** Ph.D., Chief Editor, T.T.D. and Printed at T.T.D. Press by **Sri P.Ramaraju,** M.A., Special Officer (Press & Publications), T.T.D. Press, Tirupati-517 507.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर के अंदर एकांत में संपन्न वार्षिक ब्रह्मोत्सवों के विविध वाहन सेवाओं के दृश्यमालिका

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY
Published by Tirumala Tirupati Devasthanams printing on 25-09-2020.
Regd. with the Registrar of Newspapers under "RNI" No.10742, Postal Regd.No.TRP/11 - 2018-2020
Licensed to post without prepayment No.PMG/RNP/WPP-04/2018-2020

१७-१०-२०२० शनिवार रात : हंसवाहन